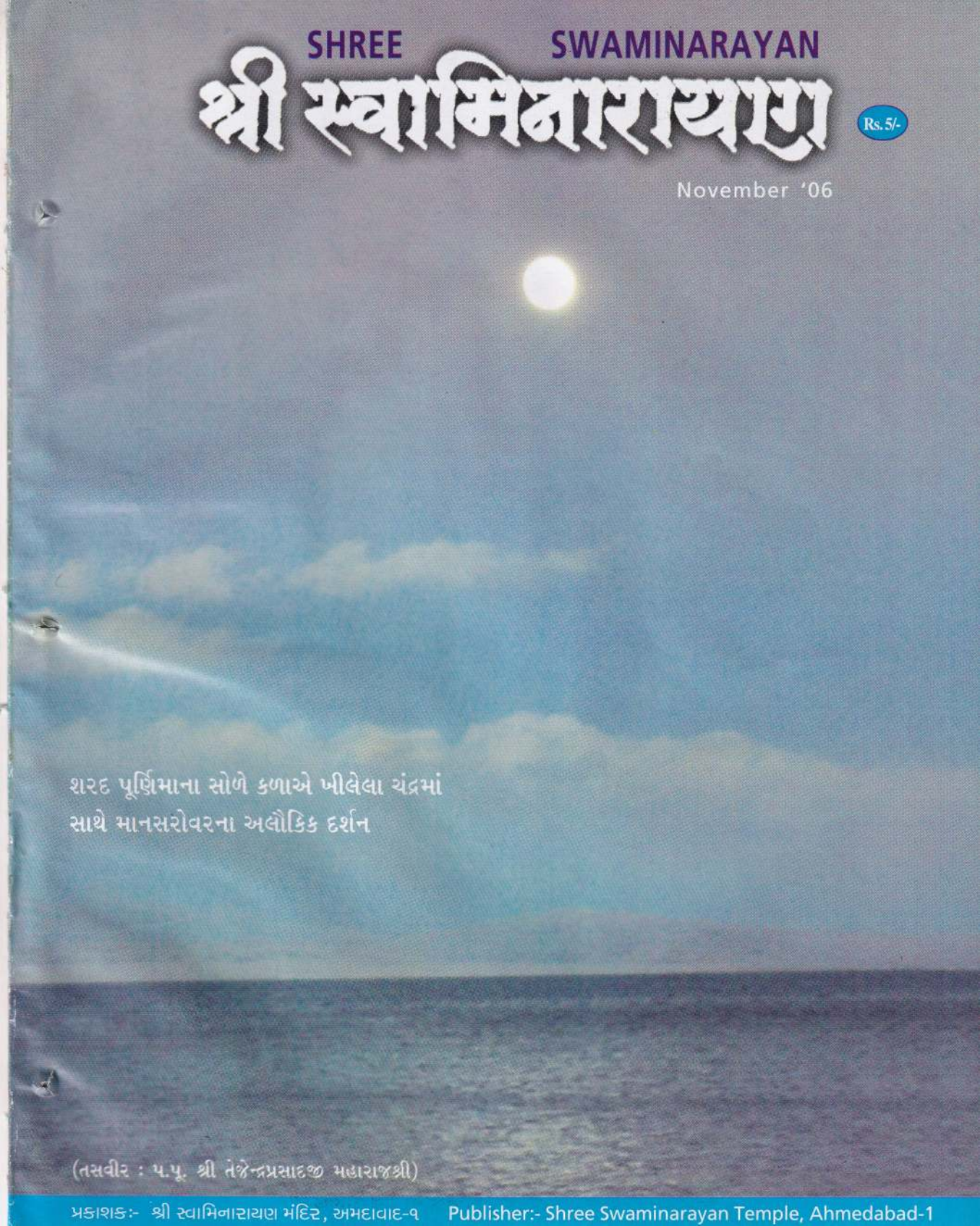
SHREE SWAMINARAYAN

શ્રી સ્વામિનારાયણ

Rs. 5/-

November '06



શરદ પૂર્ણિમાના સોળે કળાએ ખીલેલા ચંદ્રમાં
સાથે માનસરોવરના અલૌકિક દર્શન

(તસવીર : પ.પૂ. શ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી)

પ્રકાશક:- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1





हमारे इष्टदेव सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवानने श्री नीलकंठवर्णी के स्वरूप में आज से २१५ वर्ष पहले मान सरोवर विचरण किया उस प्रसंग का तादृश दर्शन प.पू. बडे महाराजश्री के महापूजा विधि के प्रसंग पर हुआ महापूजा विधि मूली के स्वामी भक्तिहरिदासजीने करवाई थी ।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

શ્રી નરનારાયણદેવ પીઠસ્થાન મુખપત્ર

SHREE SWAMINARAYAN श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ५ नवम्बर -२००६

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की "कैलाश मानसरोवर यात्रा"	५
४.	प.पू. महाराजश्री के अमृततुल्य आशीर्वचन	६
५.	श्रीमद् सत्संगिभूषण कथापारायण के सुवाक्यों का यथार्थज्ञान	८
६.	श्रीमद भागवत कथा का माहात्म्य	१०
७.	अवतार के अवतारी की ऐश्वर्य लीला	११
८.	द्रोह	१२
९.	पूज्य बडे महाराजश्री के पुरुषार्थ को सार्थक करे	१३
१०.	सत्संग सुरभि : सभी का कल्याण करना है।	१५
११.	सत्संग बालवाटिका (१) महिमा एकाग्रता की (२) कृतघ्नी नहीं होना चाहिए	१६
१२.	प्रश्नपेटी	१८
१३.	भक्तिसुधा (१) यथार्थ समझ (२) सुरत में भगवान को भी	१९
१४.	समाचार वृत्तांत	२१

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : sntemple@hotmail.com
www.swaminarayanmuseum.com / org

अस्मदीयम् तन्त्रीश्री की तरफ से.....

सर्वावतारी इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण ने जैसा उपदेश दिया है उसका स्वयं पहले आचरण किया बाद में बताया । जो कार्य मनुष्यों से सरलता पूर्वक हो सकता है । ऐसे धर्मकार्य व्रत-तप-साधना का स्वयं अनुभव किये बाद में भक्तों को करने की प्रेरणा दिये, जिससे उनके लिये सरल हो जाय । यदि साधना की जाय तो भगवान प्रसन्न होते हैं । मनुष्य का मुख्य लक्ष्य है कि इष्टदेव की प्रसन्नता प्राप्त करना । इसके साथ साथ स्वस्य ज्ञान एवं आसक्ति का ज्ञान हो इसके लिये सर्व सात्विक साधन करना चाहिए । इसीसे आत्यन्तिक मोक्ष तक पहुँचने में सरलता रहेगी । ऐसे अनेक उपाय एवं साधनो में जप, तप, व्रत, दान, योग के साथ तीर्थयात्रा का भी इतना महत्व है । इसीलिये भगवान श्री स्वामिनारायण नीलकंठवर्णी स्वस्य धारण करके सात वर्ष पर्यंत समग्र भारत वर्ष की तीर्थयात्रा के लिये निकल गये । जिस में विकट एवं दुर्गम जो आज के अद्यतन साधन से भी कठिनाई से सम्भव है तो उस समय की स्थिति जब पैदल मात्र चलना होता था, ऐसे हिमालय के तीर्थो में विचरण किये । नदी के प्रवाह में पानी में चलकर मानसरोवर की यात्रा करके वहाँ रहने वाले हंस स्वस्य आत्माओ को अपने स्वस्य का दिव्य ज्ञान देकर अक्षरधाम की प्राप्ति कराये । ऐसे पवित्र स्थल में श्रीहरि के छठ्ठे वंसज प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने संत हरिभक्तों के साथ मानसरोवर की यात्रा करके श्री नीलकंठ वर्णी की स्मृति को ताजा करा दिया । जिनके दर्शन करके हम भी श्रीहरि के दर्शन का आनंद प्राप्त करते हुए मोक्ष की प्राप्ति की तरफ गति कर सकें ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

– *शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

अक्टूबर -२००६

१. श्री रवीन्द्र गोपालभाई मोदी के यहाँ आफिस के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण, शाहीबाग ।

२. ३५ वां प्राकट्योत्सव प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में संत हरिभक्तों ने मनाया ।

६. श्री स्वामिनारायण मंदिर कालूपूर तथा नारायणघाट मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर आरती उतारने पधारे ।

श्री गीरीशभाई परसोत्तमभाई पटेल के यहाँ विवाह प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पधारे, नरोडा ।

७. श्री भूपेन्द्रभाई चतुरभाई पुजारा की दुकान के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण, नारायणपुरा, सोलारोड ।

श्री कनुभाई अमृतभाई पटेल के यहाँ उद्घाटन प्रसंग हतु पदार्पण, घाटलोडीया ।

८. श्री नटवरलाल देवचन्दभाई सोनी के यहाँ पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण, नवरंगपुरा ।

९. श्री नाथालाल अम्बालाल पटेल के यहाँ वास्तुपूजन प्रसंग पर पदार्पण, शाहीबाग ।

१०. श्री हसमुखभाई केशवजीभाई चौहाण के यहाँ पदार्पण, चांदलोडीया ।

१४. श्री संजयभाई मिस्त्री के यहाँ पदार्पण, वटवा ।

जीवराजपार्क मंदिर में सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण ।

१५. श्री रोहितभाई कानजीभाई पटेल के यहाँ सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण, कुबेरनगर ।

श्री पंकजभाई कांतिलाल ठक्कर के यहाँ पदार्पण, मेघाणीनगर ।

१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर करजीसण पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२५. से २७. अ.नि. प.पूज्या माताजी की (पूज्य आचार्य महाराजश्री की दादीमां) अस्थि विसर्जन हेतु प्रयाग एवं छपैयाधाम (नारायण सरोवर) पधारे ।

श्री नरनारायणदेव पीठ के छट्ठे आचार्य महाराजश्री के माताजी की स्मरणांजलि सभा

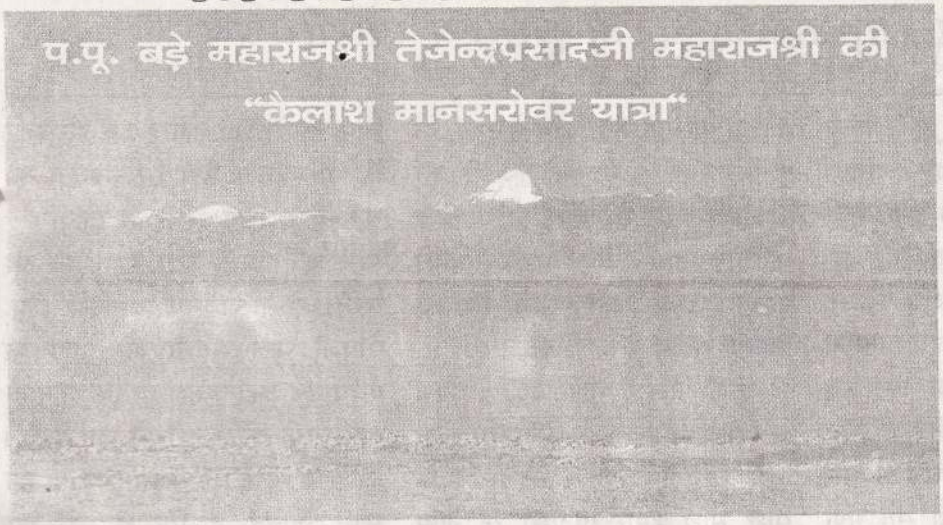
सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण संप्रदाय के उत्तर विभाग के श्री नरनारायणदेव पीठ के ५ वें अ.नि.ध.धु. आचार्य महाराजश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की गादीवाला (धर्मपत्नि) तथा निवृत्त पूज्य आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की पूज्या माताजी सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का अखंड स्मरण करती-करती ता. १६-१०-२००६ को अक्षरनिवासिनी हुई हैं । जो समग्र सत्संग को ज्ञात है ।

ता. १९-१०-२००६ से ३१-१०-२००६ तक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के निवास स्थान पर श्री स्वामिनरायण बाग पर अनेक राजकीय-धार्मिक महानुभावों में गुजरात के मुख्य मंत्रीश्री नरेन्द मोदी, मंत्रीश्री भूपेन्द्रसिंह चुड़ासमा और भाजपा गुजरात के नये प्रमुख श्री पुस्खोत्तम स्याला तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री का धर्मकुल परिवार तथा दोनो देश के अनेक संत, महंत एवं हरिभक्तों ने स्वयं उपस्थित होकर दर्शन करके अपनी भावना प्रदर्शित की थी ।

ता. १-११-२००६ की सुबह ८-३० बजे अहमदाबाद के कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में प.पू.ध.धु. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज़श्री, वर्तमान प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एवं भावि आचार्य श्री लालजी श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्ष स्थान पर पूज्या माताजी की स्मरणांजलि सभा का आयोजन किया गया । इस निमित्त पर अहमदाबाद शहर एवं गाँव गाँव से तथा विदेश से हजारो श्री नरनारथणदेव के आश्रित हरिभक्त एवं श्री नरनारायणदेव गादी के शिखरबद्ध मंदिर के महंतश्री एवं वडताल, गढ़पुर, जुनागढ़ आदि मंदिरो के संत श्रद्धांजलि अर्पण करने हेतु उपस्थित हुये थे । स्मरणांजलि सभा में सबसे पहले अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी एवं शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजीने पूज्या माताजी की बहनों की सत्संग सभा में जागृति एवं संप्रदाय में उनकी भिन्न-भिन्न सेवाओं को याद करके भावपूर्ण स्मणांजलि को अर्पण किया । अन्य विद्वान वक्ता संतो ने भी अपनी भावना अपने वक्तव्य में प्रस्तुत की । अंत में प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने अपने माताजी के दर्शनीय एवं यादगार संस्मरणो को अश्रुपूर्ण नयनों से याद करके समस्त सत्संग का आभार व्यक्त किया था । गुजरात सरकार के विधान सभा के माननीय अध्यक्ष श्री मंगलभाई पटेल पधारकर पू. महाराजश्री के समक्ष अपनी भावना द्वारा पू. माताजी को स्मरणांजलि अर्पण किया ।

इस निमित्त १० हजार जितने संत-हरिभक्तों को एवं मेहमानों को धर्मकुल की तरफ से प्रसाद प्रदान किया गया ।

प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की "कैलाश मानसरोवर यात्रा"



सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण के पुनीत चरणाविन्द से पावन परमपवित्र मानसरोवर जहाँ आज भी देवता प्रत्यक्ष स्म स्नान करने के लिये पधारते हैं । श्रीजी महाराज श्री नीलकंठवर्णी के स्म में ११ वर्ष के कोमल वय मेंआज से करीब २१४ वर्ष पूर्व नंगे पांव वनविचरण के समय हिमालय के दुर्गम पर्वतो की प्रदक्षिणा करके मानसरोवर के तलहटी में आये । जिस मानसरोवर को ब्रह्माजीने स्वयं मनोकामना से सृजन किया, जहाँ पर हंस दिव्य मोती का चारा चुगते हैं । ऐसे श्री मानसरोवर में श्रीहरि स्नान करके उसे मोक्षदायी कल्याणकारी बनाया हैं ।

गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ, बद्रिनाथ १२००० फूट की ऊंचाई पर हैं। जब कि मानसरोवर १८००० फूट की ऊँचाई पर है । बद्रिनारायण से अब सीधा रास्ता तैयार हो गया है । श्री स्वामिनारायण भगवान द्वारा स्थापित दोनो गादि संस्थान प्रथम श्री नरनारायणदेव पीठस्थान अहमदाबाद द्वितीय श्री लक्ष्मीनारायणदेव पीठ स्थान वडताल । जिसमें श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान के पीठाधिपति छठ्ठे आचार्य प.पू.ध.धु. १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री २१५ वर्ष के बाद सम्प्रदाय के प्रथम आचार्य के स्म में मानसरोवर पधारे थे ।

ता. २७ सितम्बर के दिन प्रातः अहमदाबाद से प.पू. बडे महाराजश्री छ संतो के साथ तथा १०० हरिभक्तों के साथ जेट एयरलाईन्स विमान द्वारा दिल्ली होते हुए नैपाल की राजधानी काठमांडू पहुंचे । समग्र यात्रालुंओं को श्री पशुपतिनाथ महादेव तथा शेषशैय्या पर सोए हुए श्री विष्णु भगवान का दर्शन करवाया । पूज्य महाराजश्रीने शिवलिंग का अभिषेक कराकर पूजा कि ।

दूसरे दिन काठमांडू से चीन के बोर्डर पर वीमा प्रोसेस करके स्पेश्यल गाडी में प.पू. महाराजश्री तथा अन्य चार लक्जरी बस में हरिभक्त न्यालम की तरफ प्रयाण किये । नेपाल में मावोवादियों ने बस के पैसिंजरों से रुपये मांगे जिसे ट्रावेल एजेन्ट ने दे दिये । हिमालय के दुर्गम पहाड, कल कल करते हुए झरने, चारो तरफ मनोहर प्राकृतिक सौन्दर्य घने छायादार वृक्ष, पर्वतो पर जानेवाले वत्रमार्ग का अतिक्रमण करके आठ घंटे में न्यालम पहुँचे । ६००० फूट की ऊँचाई पर पहुंचने के बाद पतली हवा के कारण श्वास में तकलीफ होने लगी थी, जिससे दो दिन तक आराम करना पडा था ।

न्यालम से पू. महाराजश्री तथा संत एवं हरिभक्त गाडियों मैं बैठकर सागा में प्रयाण किये । बीच-बीच में भोजन की टेन्ट में व्यवस्था की गयी थी । अनेक प्राकृतिक सौन्दर्य के मनमोहक दृश्य को पूज्य महाराजश्रीने अपने कैमरे में एवं वीडियो में खीचते जाते थे । सभी सागा के पास होटल में पहुँचे । यहाँ भी नवीनता यह थी की गरम पानी शाम को ही मिलता है । सुबह ठंडा पानी और वहीभी केवल दो घंटे ही मिलता है । संत गण स्वयं भोजन बनाकर भगवान को भोग लगाते थें । पू. महाराजश्री को भोजन करवाते थे । पू. महाराजश्री की अनुभूति से स्वयं श्रीजी महाराज साथ हों ऐसा प्रतीत होता था । ४००० फिट से

अनुसंधान पृष्ठ नंबर ७

प.पू. महाराजश्री के अमृततुल्य आशीर्वचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

विजया दशमी अर्थात् दैवी तत्वो का आसुरी तत्वो पर विजय । मनुष्य को बाहरी शत्रु जितना परेशान नही करते उनता काम, क्रोध, लोभ, मान, ईर्ष्या, अहंकार आदि अंत:शत्रु परेशान करते हैं । अंत:शत्रु पर विजय पाना ही श्रेष्ठ विजय है । क्योंकि अंत:शत्रु मोक्षमार्ग में अधिक विघ्नकर्ता छिद्र है। अपने अहमदाबाद मंदिर में इस दिन ब्रह्मचारी तथा पूजारी संत गण भगवान को ढाल, तलवार आदि शस्त्रों को धारण करवाते हैं । दशहरा के दिन शस्त्रोके पूजन की परंपरा है । दर्शन करतेहुए ऐसा प्रतीत होता है कि श्रीहरिने अपने भक्त के अंत:करण में अंत:शत्रुओं का नाश करने हेतु शस्त्रों को धारण किया है । अंत:शत्रुओं पर विजय पाने के लिए भक्त जो थोड़ा परिश्रम करें तो श्रीहरि उसकी सहायता करने के लिए तत्पर हैं ।

विजया दशमी अर्थात् श्रीहरि के सातवे वंशज श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का प्रागट्य दिन । प.पू. महाराजश्री के प्रागट्य दिन के प्रसंग पर जो हरिभक्त प्रत्यक्ष प्रात: दर्शन प्राप्त करने आते हैं उनको प.पू. महाराजश्री के आशीर्वचन का लाभ मिलता है । दूर देशांतर से 'हरिभक्त' इस दिवस पर अहमदाबाद मंदिर में नही आ पाए यह स्वाभाविक है। श्री स्वामिनारायण मासिक पत्रिका दूर देशांतर तक हर महीने में पहुँच जाती है। इस मासिक के माध्यम से दूर दूर के हरिभक्त भी प.पू. महाराजश्री का आशीर्वचन पढ़ सके ऐसा संक्षिप्त लेख यहाँ लिखता हूँ। वह लिखने से पहले प.पू. महाराजश्री को सत्संग सेवा की कितनी चाहना है वह देखतें हैं।

प.पू. लालजी महाराजश्री : आज के प्रसंग पर महाराज श्री दीर्घायु बने। ऐसी श्री नरनारायणदेव को प्रार्थना के साथ साथ हमारे पिताश्री के जन्म दिवस के प्रसंग पर पिताश्री से यह आशीर्वाद मांगते हैं कि हमें सत्संग सेवा करने का बल मिले और हम संप्रदाय का नाम रोशन करे ।

प.पू. महाराजश्री : शिक्षापत्री में महाराजने लिखा है कि हमारी आज्ञाओं का सभी प्रेमपूर्वक पालन करे और फिर तुरंत लिखा है कि सावधानी पूर्वक पालन करें कुछ लोग आज्ञाओं का मजबूरी या लालच-लोभ-भयपूर्वक या जबरदस्ती पालन करतें हैं । प्रेमपूर्वक आज्ञा का पालन तब होता है जब महाराज जैसे हैं हम उन्हें वैसे ही पहचान जायें । व्यवहार में हम जिसे मानते है उसके प्रति सच्चा स्नेह होने के कारण उनकी कही हर बात निभाते हैं । और उसके द्वारा कहा काम भी करते हैं ।

अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति सत्संग के इस गादी की रचना की । उसे लांछन लगे, संप्रदाय को लांछन लगे ऐसा कोई वर्तन नहीं करना चाहिए। क्योंकि सत्संग और महाराज सिर्फ हमारे लिए नहीं है । वे हरिभक्तों के भी महाराज है । इस संप्रदाय को चलाने के लिए सभी के सहयोग - साथ की जरूरत है । महाराजने हम सभी को नरनारायणदेव दिये । पू. बापुजी मान सरोवर की यात्रा पर पधारे तब उन्होंने कहा था कि "हम तो वहाँ सिर्फ फोटो खींचने जा रहे हैं । जो कुछ भी है वह सब यहीं है ।" हम सभी जानतें है कि बापूजी को फोटोग्राफी का शोख है । महाराजने हमको देव दिए है, उन देवो में रह कर महाराज हमारा कल्याण करतें है । महाराजने हमको संत, हरिभक्त, शास्त्रों को प्रदान किया है । उन सबसे अधिक और कोई प्राप्ति नहीं है । श्री नरनारायणदेव इतने प्रत्यक्ष हैं कि हरिभक्तों की छोटी से छोटी फाइल को भी वे तुरंत पास करते हैं । गांधीनगर या दिल्ली कोई फाईल लेकर जाता है तो उसे कितने धक्के खाने पड़ते है यह सभी जानते हैं ।

हम एकबार रोड़ पर गाडी से जा रहे थे तब साथ में संत-पार्षद भी थे। रोड़ पर ट्राफिक देखा इसीलिए बाहर नजर की तो रोड़ के डिवाईडर पर एक १०-१२ वर्ष की बच्ची जीवन निर्वाह के लिए खेल कर रही थी तपती गरमी का महीना होने की वजह से गाडी का काच खोलने पर गरमी लगती थी । ऐसी गरमी में ऐसा दृश्य देखकर हमारे रोंगटे ही खड़े हो गए । महाराज ने हमारे ऊपर इतनी कृपा की है कि

सत्संग की गद्दी पर बैठने के साथ ही रामानंद स्वामी के पास से सत्संगियों के लिए अन्न-वस्त्र का सुख मांग लिया था । आज्ञा में रहकर कार्य किया जाए तो ही इज्जत बढ़ती है । महाराज के द्वारा ही हमारा अस्तित्व है। सत्संग सेवा केवल बातों से नहीं होती। परंतु मन, कर्म, वचन से उसमें जुड जाने पर ही कार्य होता है । महाराज सभी को आज्ञा पालन करने हेतु बल प्रदान करे यही आज के अवसर पर प्रार्थना है ।''

प.पू. बडे महाराजश्रीने मूली जन्माष्टमी के प्रसंग पर सभा में जो आशीर्वाद का उच्चारण किया था उसके अंतर्गत थोड़े वाक्य को लिखना बहुत ही जरुरी है । ''हमको ठीक से याद है कि महाराजश्री के गादी अभिषेक के प्रसंग पर उन्होंने कहा था कि श्री नरनारायणदेव की या महाराज की वफादारी की जहाँ बात आयेगी वहाँ हम कोई समाधान नहीं करना चाहते ।'' महाराजश्री का हाथ तब मजबूत होंगा जब हम सभी उन्हें सहकार प्रदान करेंगे। मन, कर्म, वचन से श्री नरनारायणदेव के आश्रित रहें । सत्संग की महाराजने केवल दो गादी की है। मूल संप्रदाय में रहकर पुष्ट बनकर कई लोग अलग हो जाते हैं । इसीलिए हम तो ऐसा कहतें है कि मस्जिद में, चर्च में, गुरुद्वारा में जाना परंतु यहाँ से अळग होकर बनी हुई संस्था या मंदिर में इन दो गादियों को छोड़कर नहीं जाना चाहिए । अन्य अलग हुए गादी से जुड़े हुए संतो का मुख देखने में भी दोष है। परंतु महाराज का इस में भी कोई प्लानींग होगी । लेकिन हमको भी सावधान रहना चाहिए ।

इतनी बात अगर हरिभक्तों के हृदय में एकबार उतर जाए तो ''हमारे लिए तो सब समान है । हम तो सभी जगह जाते हैं । भगवान तो एक ही हैं ।'' ऐसा बोलनेवाले लोग नहीं रहेंगे ।

पृष्ठ ५ से आगे..... **प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की "कैलाश मानसरोवर यात्रा"**

अधिक ऊँचाईको भी आनंद से चढ गये । दो दिन ढहरना था ।

सागा से अब पर्यागकी तरफ प्रयाण किये । फिर ६००० फिट ऊँचाई के मध्य में आनंद-प्रसन्नता से न्यालम मुनिजी के आश्रम तक पहुँचे। स्वामी सच्चिदानंद सरस्वतीजीने मेहनत करके यह आश्रम यात्रियों के लिये ही बनवाया है । वहाँ एक दिवस आराम किया । श्वास की तकलीफ अब मालूम हो रही थी । पर्याग से अब वास्तव में विकट यात्रा प्रारंभ हुई । श्वास की तकलीफ का कोई कपूर से तो कोई ऑक्सिजन से निवारण कर रहे थे । शाम को ६ बजे मानसरोवर के प्रत्यक्ष दर्शन हुए । पू. महाराजश्रीने संत, हरिभक्तों के साथ मानसरोवर में स्नान किया । कुछ लोगों ने पाठ किया। माला की । मान सरोवर के तट पर पू. मुनीजी के दूसरे आश्रम में सभी ने निवास किया । शरद पूनम की मनोहर रात्रि थी । चंद्रमां पूर्ण कला से खिला हुआ था और उसका प्रतिबिंद मानसरोवर के निर्मल जल में दृश्यमान हो रहा था । तारें टिमटिमा रहे थे । १८००० फिट की ऊँचाई से सभी लोग धरती के सौंदर्य को निहार रहे थे । देवगण जिस में स्नान करते हैं। समीप में ही श्वेत बरफ से आच्छादित कैलास पर्वत है, चारों तरफ पर्वतो की शृंखला है एक नयी दुनियां की ही प्रतीति हो रही थी । पवित्र वातावरण में नीलकंठवर्णी के रुप में भगवान सभी यात्रिकों की रक्षा कर रहे थे । निद्रा में से भी उठकर बैठ जाये ऐसी प्रक्रिया थी ।

प्रातः उठकर महापूजा का आयोजन किया गया था । तट पर प.पू. बडे महाराजश्री के मुख्य यजमान पद पर संतो के साथ यात्रालुगण महापूजन में जुड गये । मूली के संत श्री भक्तिहरिदासजीने महापूजा करवाई । सभी के मनोरथ पूर्ण करके दोपहर को भोजन करके मानसरोवर का जल लेकर शाम को पर्याग रवाना हुए । कुछ हरिभक्त तीन दिन तक कैलास पर्वत की परिक्रमा करने हेतु रुक गये । शाम को पर्याग आश्रम में निवास किये । वहाँ से दूसरे दिन सागा होकर न्यालम पहुँचे । वहाँ से काठमंडू आये । कठिन यात्रा का संस्मरण करते हुए दिल्ही से अहमदाबाद पधारे ।

सभी यात्रा में यह यात्रा कठिन है परंतु पू. बडे महाराजश्री को साथ रखकर यात्रा करने से हर क्षण श्रीजी महाराज समीप है ऐसी अनुभूती होती थी ।

- अहेवाल - प्रहलादभाई वि. पटेल (न्युजर्सी-यु.एस.ए.)

श्रीमद् सत्संगिभूषण कथापारायण के सुवाक्यों का यथार्थज्ञान

वक्ता : पू. महंत शस्त्री स्वामी श्री निर्गुणदासजी एवं पू. शास्त्री स्वामी श्रीहरिजीवनदासजी

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

अपने से कोई शक्तिशाली हो तो उसके सामने नही बोलना चाहिए, यह नीति शास्त्र कहता है ।

नाशवंत पदार्थ में जिन्हे आशक्ति हो उन्हें अवश्य जन्म लेना पडता है । जिस में आसक्ति हो वही स्वस्त्र मिलता है । स्वामिनारायण भगवान कहते हैं कि कोई चमत्कार दिखाकर हमारे सत्संगी को अपने वश करना चाहे तो उस पर विश्वास न करके भगवान की भक्ति पर विश्वास करना चाहिए ।

अयोध्या में एक मिठाई की दुकान है इसी तरह अन्य भीमिठाई की दुकान होगी, उस दुकान में चाहे जितने दिन की मिठाई हो वह बिगडती नहीं है, वही मिठाई अपने घर लायें तो २-४ दिन में बिगडजाती है, इसप्रकार घनश्याम महाराज कहा करते ।

पुस्त्र जो भी व्रत, जप, तप, यज्ञ, पूजा, पाठ करता है, उसका आधा फल पत्नी को मिलता है । इसीलिये उसे अर्धांगिनी कहा जाता है । पुस्त्र जोभी पाप हिंसा चोरी, अधर्म करता है उसे अकेले भोगना पडता है । पुस्त्र जो भी पुण्य करता है उस में आधा भाग स्त्री कोमिलता है लेकिन पाप में कोई भाग नहीं होता । इसीलिये पत्नी के धर्मपत्नी कहा जाता है । जीवहिंसा इत्यादि जो अधर्म वह यदि स्त्री करे तो पाप पति को भी भोगना पडता है । पुस्त्र का धर्म है कि वह अपनी पत्नी को पाप कर्म से रोके । शास्त्र का वचन है कि थोडे सत्कर्म से भी स्त्री को भगवान मिल जाते है । भगवान का जब अवतार होता है तब प्रथम सूतिका गृह में भगवान का दर्शन माता को होता है ।

— स्त्री की दृष्टि करुणा एवं दया से परिपूर्ण होती है । पुस्त्र की दृष्टि कठोर होती है, इसीलिये पुस्त्र को चाहिए की प्रसूतिगृह में न जाय अन्यथा बालक क्रूर एवं कठोर पैदा होगा । लेसर किरणों की अपेक्षा मनुष्य की दृष्टि में ताकात दश हजार गुना अधिक होती है । योगी पुस्त्र अपनी दृष्टि का पूर्ण उपयोग कर लेते है । गोपालानंद स्वामीने सत्संग की प्रतिष्ठा के लिये चन्द्रग्रहण को रोक दिया था ।

— जिसने भगवान को अपना जीवन समर्पित किया हो जिसने साधु पुस्त्रो को वंदन किया हो, जिसने अपने घर में अतिथि को भोजन कराया हो, उसके लिये मोक्ष दुर्लभ नहीं है ।

— जहाँ पर स्त्री-पुस्त्र छोटे-बड़े, उत्तम-खराब का भेद हो वहाँ भय होती है । परमात्मा के दिव्य धाम में कोई भेद नहीं होता, वहाँ तो केवल परमात्मा एवं मुक्तात्मा होते हैं ।

— परमात्मा को जो स्मरण करते है, उनका अंतःकरण निर्मल होता है ।

— परमात्मा को जो पत्र, पुष्प, फल तथा जल श्रद्धा-भक्ति से अर्पित करतें हैं उनके ऊपर भगवान की अपार कृपा होती है ।

— मूंग को उबाले तो एक साथ सभी पकजाती है, लेकिन उसमें पत्थर होतो वह जैसे का तैसे ही रहता है । किसान पकेनेनुआ को रास्ते में फेंक दे, उसके ऊपर से गाडी चली जाय तो भीवह जैसा का तैसा हो जाता है, ठीक यही स्थिति सत्संग की है । जब सत्संग में आते है तब मस्तक हिलाकर "सत्यबात है - सत्यबात है" ऐसा कहते हैं । जब घर जाते हैं वहाँ भी ऐसा ही कहते हैं । इसीलिये पक्के नेनुआं जैसा उनका जीवन है ।

— वर्तमान समय में सभी के नाम अच्छे रखे जाते है, लेकिन उनके काम बहुत खराब है । पहले जमाने में मफत, कचरा, धुरहू, कनकमाल, गांडाभाई इत्यादि नाम होते थे फिर भी उनके काम अच्छे होते थे ।

— भगवान अपने भक्तों को लूंटने की अपेक्षा नहीं रखते, केवल वे प्रत्येत व्यक्ति के कमाई का दशवां या वीसवां भाग धर्मार्थ दान देने की बात कही है । भगवान ऐसे द्रव्य को लेकर भक्त का श्रेय करते है, उससे वृद्धि होती है, भक्त सुखी हो जाता है । भगवान चाहते है कि भक्त कभी दुःखी न रहे ।

— जो भक्त मंत्र-तंत्र में विश्वास न करके केवल भगवान में श्रद्धा रखते हैं वे सुखी होते है, इसीलिए प्रतिदिन मंदिर आना चाहिए ।

— घर के प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि सायंकाल एकत्र होकर सभा करें । कमसे कम १० मिनिट शास्त्र वांचन करे जिससे कुटुंब में आने वाली परंपरा मे उत्तम संस्कार

आयेगा । सत्संग में आत्मीयता बढेगी। संस्कृति सुरक्षित रहेगी ।

— जेतलपुर धाम सभी पापो को हरनेवाला धाम है ।

संत जमें ते भेणो हूं जमूं रे,
संत भमें ते केडयुं हूं भमुं रे ।
संत दुःखणे हूं दुःखाणो रे,
एह वात सत्यजन जाणे रे ॥
संत हूं ने हूं ते वणी संत रे,
एम श्रीमुखे कहे भगवंत रे ।
संत मानजो मारी मूरति रे,
एमा फेर नथी एक रती रे ॥

पापी मनुष्य के पहाड़ जैसे अपराध को भगवान शरण में आने पर राई जितना मानतें है । प्रायः चोर-पापी-दुरात्मा भी जब भगवान का भक्त बनता है तोदूसरे सत्संगी से आगे निकल जाता है ।

— जिसने भगवान की भक्ति किया हो, दर्शन किया हो वही साथ जाता है । जिन्हें भगवान पर श्रद्धा है, निष्ठा है उन्हीं का कल्याण होता है । जो भगवान का नाम भी लेना नहीं चाहते, नियम नहीं पालते, संस्कार जीवन में नही है, उनके जीवन में कल्याण कैसे हो सकता है ?

— जाने अनजाने 'स्वामिनारायण' नाम मुख में से निकलते ही उसके जन्म जन्मांतर के पापों का नाश हो जाता है । स्वामिनारायण भगवान का आश्रय, उपासना, दर्शन करने से अक्षरधाम की प्राप्ति होती है ।

— कालुपुर मंदिर के नरनारायणदेव की मूर्तियां देवताओं के शिल्पी विश्वकर्मा ने बनाई है, इन मूर्तियों का पूजन देवराज करते थे । आज भी बड़े-बड़े देवगण इन मूर्तियों का नित्य दर्शन करने आते है । प्रतिष्ठा के समय पर यज्ञ मंडप (आज मंदिर में जहाँ छत्री है) से मंदिर के गर्भगृह तक नरनारायणदेव की दोनो मूर्तियां श्रीजी महाराज के साथ चलकर अपने आप प्रतिष्ठा के स्थान पर आकर स्थापित हो गई थी ।

— नरनारयणदेव की चौखट पर खड़े रहकर स्वामिनारायण भगवानने कहा, नरनारायणदेव के स्वस्म में और हमारे स्वस्म में लेशमात्र भी फर्क नहीं है । जो नरनारायणदेव की सेवा करेगा उसे हम नरनारायणदेव में रहकर अंगीकार करेंगे । और जीवात्मा को हम अक्षरधाम में ले जायेगें ।

— नरनारायणदेव का जो आश्रय करेगा, दर्शन करेगा उसे नरनारायणदेव के तप का फल मिलेगा । उस तप के फल से जीवात्मा को भगवान के स्वस्म की पहचान होगी । भगवत स्वस्म के दर्शन के सिवाय जीव पृथ्वी पर यहाँ-वहाँ भटकता है ।

— जिसके जीवन में अंतःकरण में भगवान होतें है, वह दूसरे के जीवन में भगवान को प्रस्थापित करने का प्रयत्न करता है । संत के हृदय में भगवान होते हैं । इसीलिए संत दूसरे में भगवान का भाव-विचार प्रस्थापित करता है ।

— कुछ जीव ऐसे होतें हैं कि उसे भगवान मिलतें हैं परंतु उसका सुख वह प्राप्त नहीं कर पाता ।

— कोई सत्पुस्म की कृपा हुई हो तो अंतकाल में भगावन की याद आती है ।

— जगत के पदार्थ दुःखस्म है परंतु भगवान सुखस्म है । परंतु हमारी समझ मिथ्या है । परमात्मा का जीवन के साथ निःस्वार्थ संबंध है । जीव परमात्मा का दास होने की जगह संसार का दास बन जाता है ।

— जगत के पदार्थ में जितनी आसक्ति है, उतनी ही भगवान में आसक्ति हो जाये तो जन्म-मरण चला जायेगा ।

— हनुमानजी जैसी दासभक्ति पर स्वामिनारायण भगवान बहुत प्रसन्न होतें है । स्वामिनारायण भगवान की कृपा दृष्टि हो तो जीव को भगवान की पहचान हो जाती है ।

— जिसे भगवान को प्रसन्न करने आता हो उस पर समग्र विश्व प्रसन्न रहता है । जिसने अपना जीवन भगवान के चरणों में समर्पित कर दिया है उस पर भगवान की अपार कृपा होती है ।

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीका
३५ वा प्राकट्योत्सव प्रसंग
पर मंगल कामना

श्री कोशलेन्द्रं मुदाचार्यवर्यम्
गुरुंस्तथा पितरं तन्नमन्तम् ।
सर्वाधिकं ज्ञानिनां मानदक्षम्
दीर्घायुषं प्रार्थयामः प्रणामम् ॥
स्वामिनारायणं देवम्
नौमि सद्गुणकाम्यया ।
कृपया देवदेवस्य
सर्व श्रेयस्करं भवेत् ॥

(डॉ. वासुदेव वि. पाठक वागर्थ)
(२, अक्टूबर, ०६ विजया दशमी)

.श्रीमद भागवत कथा का माहात्म्य

- साधु गोपालचरणदास (श्री स्वा. संस्कृत महाविद्यालय, जेतलपुर)

इस जगत का जीवात्मा अनेक मानसिक और शारीरिक दु:खो से घिरा हुआ है । समग्र दिवस वह दु:खो से पीड़ित ही रहता है। वह अपना शारीरिक दु:ख दवाओं से मिटा लेता है । परंतु मानसिक दु:ख मिटाना हो तो श्रीमद् भागवत का रसपान करना चाहिए । उसका स्मरण और श्रवण करना चाहिए। मनुष्यने चाहे कितने ही पाप किये हो परंतु भागवत का रसपान करने से उसके सारे पापों का नाश हो जाता है। उसका दृष्टांत राजा परीक्षित है । उन्होंने सात ही दिन में मोक्ष प्राप्त कर लिया था ।

जब शुकदेवजी महाराजने कथा का प्रारंभ किया तब स्वर्ग के देवता गण शुकदेवजी के पास अमृतकुंभ लेकर आये । और कहा कि शुकदेवजी आप यह अमृतकुंभ राजा परीक्षित को दे दीजिए और हमें अमृतस्मी कथा प्रदान कीजिए। तब शुकदेवजीने देवताओं की हंसी उड़ाते हुए कहा,

क्व सुधा क्व कथा लोके क्व
काच: क्व मणिर्ममहान् ।
ब्रह्मराजो विचार्यैव तदा
देवाञ्झहास ह ॥

इस संसार में क्या काच और क्या महामूल्य मणि ? क्या अमृत और क्या कथा है ? शुकदेवजीने उस समय देवताओं का उपहास किया इसीलिए कथा के अनाधिकारी मानकर उन्हें कथामृत नहीं दिया ।

ऐसी श्रीमद् भागवत कथा जो देवताओं को भी दुर्लभ है । अगर वह हमें भी मिले तो हमारे भाग्य को भी धन्य मानना चाहिए ।

सनकादिक इस भागवत् शास्त्र का महात्म्य बताते हुए कहतें है कि श्रीमद् भागवत की कथा का सेवन आस्वादन करना चाहिए। इसके श्रवण मात्र से ही श्रीहरि हमारे हृदय मे आकर विराजमान हो जातें हैं । मुक्ति के लिए श्रीमद् भागवत ही श्रेष्ठ है ।

हे भक्तजनो जब तक लोग अच्छी तरह से श्रीमद् भागवत का श्रवण करते नहीं है तब तक उनमें पाप का वास होता है। घर में रोज-नित श्रीमद् भागवत की कथा हो वह घर घर नहीं परंतु मंदिर समान होता है। तीर्थ बन जाता है। उस घर के लोगो के सारे पाप धुल जाते हैं। इस प्रकार हम हमारे पापो को धोने के लिए हजारो कि.मी. दूर से आई हुई गंगा नदी में जाते हैं फिर भी हमारे पापो का नाश नहीं होता है। परंतु हम घर में ही रहकर एकचित से श्रीमद् भागवत का श्रवण करे तो हमारे समस्त पापों का नाश हो जाता है । यह है श्रीमद् भागवत का माहात्म्य ।

भागवत का माहात्म्य बताते हुए सनकादिक कहते हैं कि जो मनुष्य अहर्निश भागवत का अर्थ सहित पाठ करे तो उसके करोडों पापों का नाश होता है। इसमें लेश मात्र संदेह भी नहीं है। जो मनुष्य हररोज भागवत का आधा या चतुर्थांश श्लोक भी बोलता है उसे राजसूय और अश्व मेध यज्ञो के फल मिलते है। नित्य भागवत का पाठ करना चाहिए तुलसी कासिंचन करना चाहिए, गाय की सेवा करनी चाहिए । भगवान का चिंतन करना चाहिए । यह चारों क्रियाएं समान है। जो मनुष्य अंतकाल में श्रीमद् भागवत का वाक्य भी सुनता है उस पर प्रसन्न होकर स्वयं भगवान उसे वैकुंठधाम, अक्षरधाम में ले जाते हैं।

जिस दुष्ट ने अपने जीवन में चित लगाकर श्रीमद् भागवतामृत का थोड़ा भी रसास्वाद नहीं किया उसने अपना जीवन गर्दभ कि तरह व्यर्थ कर दिया है। उसने केवल अपनी माता को प्रसव-पीड़ा देने हेतु ही जन्म लिया है । ऐसा स्वयं देवराज इन्द्र और देवतागण कहतें हैं ।

ऐसे श्रीमद् भागवत की प्राप्ति हमें कई जन्मों तक पुण्य का उदय होने पर ही प्राप्त होती है। यह फल हमें योगसमाधि से नहीं मिलता है। जो फल हमें तप से नहीं मिलता वह फलहमें कलयुग में कथा का रसपान करने से मिलता है।

यत्फलं नास्ति तपसा न योगेन
समाधिना ।
अनायासेन तत्सर्वं सप्ताह श्रवणेन
लभते ॥

धुंधुकारी ने अपने जीवन में केवल पाप किये थे उसने एक भी पुण्य कार्य नहीं किया था । महान पिंडदान भी किया गया फिर भी उसे मोक्ष नहीं मिला। ऐसे महापापी धुंधुकारी को मोक्ष महान पावनकारी श्रीमद् भागवत का श्रवण करने से मिला ।

तो अंत में भगवान के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु, हे नरनारायणदेव हमें कथा करने का बल प्रदान करें । इस कारण हम जगत कें अनेक मनुष्यो को मोक्ष का मार्ग बता पाएँ ।

अवतार के अवतारी की ऐश्वर्य लीला

- प्रो. महादेव धोरीयाणी (राजकोट)

"जन्म से प्राप्त हुई भावनाओं की विशुद्धता स्वार्थ के साथ मिश्रित हो ऐसा कदापि नहीं हो सकता । भावनाओं का विस्मरण होना अनुचित है । मुक्ति-मार्गी साधना में श्रीहरि इच्छा का मिश्रण हो तो महाराज की महिमा निष्फल हो ऐसा कदापि नहीं हो सकता ।"

पांचाल देश के 'वांकिया' गाँव के चोर ने चार जितने सवारो को प्रवेश करवाया तब प्रातः रोज की तरह दरबारों की सभा भरी हुई थी । यह चारों घोड सवारों में से माणकी पर सवार हुए सहजानंद स्वामी को देखते है । वांकिया के दरबार 'मोका खाचर' खडे हो उठे और महाराज को दंडवत् करने लगे । श्रीजी महाराजने माणकी पर से उतरकर दोनो कंधो से मोका खाचरको प्रेमपूर्वक पकडकर, खडा किया । धीरे-धीरे समस्त सभा मोकाखाचर का अनुकरण करने लगी । 'जय स्वामिनारायण .... जय स्वामिनारायण' ऐसा कहकर मंगल ध्वनि द्वारा चोरों के कानों को ध्वनित कर दिये ।

मोका खाचर की वांकिया गाँव के पास उतावली नदी के किनारे नयनरम्य बगीचा था । महाराज इसी बगीचे में पधारे हैं ऐसा पता चलते ही आस-पास के गाँवमें से भी भाविक भक्तों का गण दर्शन करने हेतु पधारा । गाँव के उपरोहित महाराज को बुलवाकर रसोई तैयार करवाई और मोकाखाचरने महाराज तथा उनके साथ आने वालों कों प्रेमसे भोजन करवाया ।

रोज सुबह-साम सभा का आयोजन होता था । उस समय सत्संग चल रहा था । प्रश्नो को पूछकर आगंतुक अपनी शंका का समाधान कर रहें थे । परंतु आज मोकाखाचर कुछ उदास थे । श्रीजी महाराज ने दिव्य दृष्टि द्वारा उनके दृढ संकल्पों को जान लिया । उसके बाद महाराज ने मोका देखकर मोका खाचर से पूछा : "दरबार ! आप को कुछ शंका है ऐसा मालुम होता है ।"

"नहीं महाराज ! ऐसा कुछ नहीं है ..... परंतु गाँव की जमीन के जो भाग हुए है उस में मेरे गाँव में सुखपर और वांकिया भी है । सोच रहा हूँ कि वांकिया में ही मकान बनाकर स्थिर हो जाऊँ ।"

महाराजने हँसते हुए कहा कि, "अरे ! मोका खाचर गाँव के मालिक के लिए मकान तैयार करवाना कोई बड़ी बात नहीं है । आप चाहो तो दरबार गढ भी तैयार हो सकते हैं ।"

"महाराज ! मैंने तो मन हीमन ऐसा संकल्प कर लिया है कि सहजानंद स्वामी वांकिया पधारे तब उन्हीं के शुभ हाथों से मकान का नक्शा तैयार करवाऊँ और वहीं पर स्थान भी निश्चित करें ।"

महाराजने प्रशन्न होकर कहा : "चलो उसमे क्या है । स्थान हम निश्चित कर देते हैं ।" ऐसा कहकर सभी खड़े हो गये ।

महाराज वांकिया गाँव की दिशा की तरफ छोटे से पर्वत के पास गये । और वहाँ आकर कहा, "मोका खाचर, रहने के लिए यह स्थान ही पर्याप्त है ।"

"पर्याप्त" शब्द में श्लेष अलंकार की उपस्थिति से दरबारों में हास्य की लहर दौड़ गयी ।

"जैसी महाराज की इच्छा ।" मोका खाचरने कहा, महाराज ने एक छोटी सी लकडी ली और कहा : "देखो खाचर ! इस लकडी से मैं जहाँ-जहाँ रेखा बनाऊँगा वहाँ तुम मेरे पीछे-पीछे निशानी की जगह पर पत्थर रखने का प्रबंध करो ।"

इस अवतार के अवतारीने तो नक्शा बनाते बनाते दो बीघा जमीन खींच ली। मोकाखाचरने कहा "महाराज ! यह तो आपने बड़े दरबारगढ का नक्शा बनाया है ।"

"दरबार ! मैंने तो भविष्य का विचार किया है । दरबारगढ का नक्शा विविध कमरों के साथ बनाया । इसीलिए आप आलीशान दबदबायुक्त दरबारगढ ही बनाना ।"

"परंतु.... महाराज ! मैं तो दो छोटे गाँव का छोटा सा सरदार कहलाता हूँ मेरा कुंवर गेलो खाचर एक ही सन्तान के रूप में है ।"

"दरबार ! मैंने जिस तरह से नक्शा तैयार किया है उसी प्रकार दरबारगढ तैयार करवाए । आपके कुंवर गेला खाचर का वंश इस दरबारगढ में भी नहीं समायेगा इतना बड़ा होगा । भविष्य में गेलाखाचर को यह दरबारगढ भी छोटा लगेगा ।" श्रीजी माहाराजने अपनी दिव्य वाणी के भव्य ध्वनि के साथ निश्चितरूप से भविष्यवाणी की और मोका खाचर की मेहमानगति का आनंद उठाया । माणकी पर सवार होकर अन्य घोडसवारों के साथ गरवी गिरनार की यात्रा पर चल दिये ।

मोकाखाचर ने शीघ्रता से वचन मांग लिया कि, "महाराज ! जुनागढ की यात्रा करके गढड़ा जाते समय अवश्य वांकिया पधारकर दर्शन का लाभ प्रदान करके ही जाये ।"

महाराजने चार किनारे तैयार करवाये । कलात्मक नक्शा बनवाया उसमें से एक कमरा ताबडतोड तैयार करवाया । मोकाखाचरने श्रीजी महाराज की मनोरम्य

मूर्ति उसमें स्थापित की । दीवालों पर रामानंद स्वामी, प्रेमानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी, मुक्तानंद स्वामी, निष्कुलानंद स्वामी आदि परमहंसो की तसवीर लगवाई । महाराज के प्रंसगोचित चित्रो को बनवाया । जगह-जगह शिक्षापत्री ..... वचनामृत के सूत्र लिखवाये । इस प्रकार श्री सहजानंद स्वामी के सुस्वागत के लिए कमरा तैयार करवाया ।

वचन अनुसार सौराष्ट्र की तीर्थयात्रा परिपूर्ण करके वापस लौटते समय महाराज जब वांकिया गाँव पधारे तब मोका खाचरने अत्यंत धूमधाम से उत्सव करके यह कमरा महाराज को दिया । कमरे में प्रवेश करते ही महाराज के मुख में से शब्द निकले ! "अरे दरबार ! आपने तो एक ही कक्ष में ही अक्षरधाम खड़ा कर दिया ।"

"महाराज ! दरबारगढ का पूजन-प्रवेश आपके ही वरद् हाथों से करवाना है, इसीलिए थोड़ी शीघ्रता से यह कक्ष तैयार करवा दिया है ।"

महाराज मोकाखाचर का मर्म समझ गए । मोका खाचर की बुद्धिमता श्रीराम के पास से अपनी कमाई भी लेने को अस्वीकार्य करने वाले केवट जैसी लगी । महाराजने मन में सोचा कि उस अंध वणिकने थोड़े में ही सब कुछ मांग लिया था । "मैं अपने मध्य पुत्र की पत्नी को तीसरे मंजिल पर सोने की मथनी से छाछ मथते देखना चाहता हूँ ।" मोका खाचर ने मौका देखकर अच्छी बात कही थी ।"

जिस कक्ष में महाराजने भोजन किया था आज वही कक्ष "प्रसादी के कक्ष" के नाम से प्रसिद्ध है । महाराज ने प्रेम के प्रतीकस्म गेलाखाचर को एक तलवार भेट में दी । उस कक्ष का दर्शन करने हेतु आज भी लोग वांकिया गाँव आते हैं । इस प्रकार वांकिया गाँव सम्प्रदाय के लिए तीर्थधामस्म बन गया है ।

दोह

- साधु प्रेमप्रकाशदासजी गुरु हरिप्रसाददासजी (वाली)

इस जगत में कई प्रकार के पाप होते हैं और उनका प्रायश्चित्त भी शास्त्र में कहा गया है । परंतु साधु पुस्त्रों का द्रोह करना उनका अपमान करने का प्रायश्चित्त का उपाय कहीं नहीं बताया गया है । श्रीमद् भागवत के दशमस्कन्ध में शुकदेवजी कहते हैं कि,

आयुः श्रियं यशो धर्म
लोकानाशिष एव च ।
हन्ति श्रेयांसि सर्वाणि
पुंसो महदतिक्रमः ॥

अर्थात् हे राजन्, जो पुस्त्र साधु माहात्माओं का द्रोह करता हैं उसकी लक्ष्मी, कीर्ति, धर्म, लोक, परलोक, विषयभोग इन सभी वस्तुओं का नाश होता है । जय और विजय ही भगवान के पार्षद थे परंतु सनकादिक ऋषिओं का तिरस्कार किया इस कारण उनको तीन-तीन जन्म लेने पडे और असुर बन गए ।

राजा अंबरीष भगवान की सेवा पूजा में खूब मग्न रहतें थे । एक दिवस अंबरीष राजाने विचार किया कि मैं सात प्रहर भगवान की पूजा करुँ और एक प्रहर निंद्रा लूँ । परंतु योगी और उद्योगी के लिए निंद्रा परमशत्रु है । इसीलिये निद्रा में समय नहीं विताना चाहिए । अपनी आचार संहिता में महाराजने हमको आज्ञा की है कि,

"व्यर्थकालो न नेतव्यो भक्ति
भगयतो विना ।"

मनुष्य को अपना व्यर्थकाल निर्गमन नहीं करना चाहिए केवल भगवान की भक्ति करनी चाहिए । उसी प्रकार राजा अंबरीष एक समय एकादशी व्रत का पारणा करने हेतु दुर्वाशा मुनि को निमंत्रण प्रदान किये । दुर्वाशा आकर गंगास्नान करने अपने साथ शिष्यों को लेकर जातें है। तब संध्या वन्दनादिक पूर्ण करतें हैं । इस तरह शिष्यगण जलक्रीडा में मग्न हो जाते हैं । और एकादशी को पूर्ण होनेका समय हो जाता है । राजा चिन्तित हो उठते है । तब राजपुरोहित के कहने पर भगवत्चरणामृत और तुलसीपत्र द्वारा एकादशी की पूजा करतें हैं । इस तरह दुर्वाशा मुनि को पता चलते ही अपनी जटा में से कृत्या को उत्पन्न करतें है । कृत्या अंबरीश को मारने आये उससे पहले ही भगवान अपने हस्तकमल में से तीनों लोको की रक्षा करने वाले चक्र से दुर्वाशा कोमारने दौडते हैं ।

"त्रयाणा रक्षार्थः त्रिपुरहर जागर्ति
जगताम् ।"

दुर्वाशा मुनि अपनी रक्षा हेतु तीनों लोको में भटकते हुए अंत में अंबरीष के चरणो में आ गिरते है । और चक्र पुनः विष्णुलोक में जाता है । इस प्रकार परम प्रिय भक्तो आपने देखाकी संत पुस्त्र अंबरीष राजा का द्रोह करने के कारण दुर्वाशा मुनि को तीनों लोक में भटकना पड़ा है । प्रिय भक्तो, नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि हम से भी कभी भगवान-भगवान के साधु पुस्त्रों का कभी भी द्रोह न हो पाये ।

पूज्य बडे महाराजश्री के पुरुषार्थ को सार्थक करे

- प्रो. सूर्यकांत भट्ट (भुज)

सत्संग में जन्म अति पुण्यात्माओं का होता है। क्योंकि ऐसे जीवात्माओं को मनमोहिनी भगवान की मूर्तियों का दर्शन, आचार्य, संत का समागम अत्यन्त आनंददायक होता है । यह अन्यत्र दुर्लभ है। असंख्यात जीवों के कल्याण के लिये पांच नंद संतोने सर्वावतारी श्री सहजानंद स्वामी के शब्द देह को "वचनामृत" में अति आदर पूर्वक स्थान दिया है । ऐसे आध्यात्मिक ग्रंथ की कहीं तुलना संभव ही नहीं है। यह तो भगवान की साक्षात् वाणी है।

श्री नरनारायण देव गादी संस्थान के पूज्य बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का षष्टि पूर्ति महोत्सव बडे धूम धाम से मनाया गया था । इस अवसर पर बहुजन हिताय पूज्य बड़े महाराजश्रीने ८-४-०४ के दिन "वचनामृत में श्री नरनारायणदेव" अंजन शलाका स्म दिव्य पुस्तिका अपने हाथों से लिख कर प्रकाशित किया था। हमारे दो शब्द में उनका उद्‌बोधन है कि - इस कल्पवृक्ष स्म सत्संग में हमें चिन्तामणि के समान अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति सर्वोपरि सर्वावतारी श्रीहरि की प्राप्ति हुई है। यदि कीसी को यह बात समझ में न आवे कि स्वयं श्रीहरिने स्वयं अपने स्वस्म को सर्वप्रथम नरनारायणदेव के स्म में प्रतिष्ठित किया है, अर्थात् दोनो में लेशमात्र भेद नहीं है, तो समझना चाहिए की उसके कल्याण में निश्चित ही कहीं कमी है। ऐसे श्रीहरि के मुख से बोले गये तथा पांच नंद संतो द्वारा संपादित किये गये २७३ वचनामृत को जो ध्यान पूर्वक अभ्यास करे तो ही यथार्थ की प्रतीति हो सकती है। हमनें वचनामृत के कुछ ही अंश लिखे है। लेकिन मुमुक्षु को चाहिये की वचनामृत का अक्षरशः वांचन करके अपने हृदय में उतारे, जिससे परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की यथार्थ महिमा को समझ सकेंगे तथा सत्संग के ध्यान भजन का सुख प्राप्त कर सकेंगे।

इस दिव्य पुस्तिका के मुख्यपृष्ठ पर श्रीजी महाराज की परंपरा के प्रसादी की श्री नरनारायणदेव की मूर्ति जो आज पूज्य बडे महाराजश्री की प्रातः कालीन पूजा में रहती है, उसे प्रकाशित किया गया है। पृष्ठ भाग में प्रसादी के चरणारविन्द को प्रकाशित किया गया है। पूज्य महाराजश्री तो श्रीहरि के अपर स्वरुप है । उनके सामने श्री नरनारायणदेव प्रत्यक्ष रहतें हैं । हम सभी के लिये ही वे इतना पुरुषार्थ करते है।

पूज्य बडे महाराजश्री ने जिन वचनामृतों को श्री नरनारायणदेव से सम्पृक्त प्रकाशित किया है, उन्हीं के कुछ अंश हम यहाँ दर्शा रहे हैं। गढडा प्रथम के ८ वे वचनामृत में श्रीहरि ने जो उद्‌बोधन किया है, जिन्हें नंद संतोने लिखा बाद में श्रीजी महाराज ने कहा कि श्री नरनारायणदेव के प्रताप से हम अपना वर्तन करते है। मैं आत्मा हूँ, अछेद्य हूँ, अभेद्य हूँ, सच्चिदानंद हूँ, हमारा जो बडप्पन है, जो स्वस्म है, जोप्रकाश है वह सब श्री नरनारायणदेव की उपासना से है। उसी परमात्मा श्री नरनारायणदेव की उपासना के प्रताप से इस ब्रह्मांड में जितनी देवांगनाये हैं वे सभी सेवा में आकर खडी रहती है तथा वे ब्रह्मांड के सभी पदार्थ लाकर दें तो भी हमें मुग्ध नहीं कर सकती है।

गढडा के ४८ वें प्रकरण में .... हमारी यह आज्ञा है कि हरिभक्त मात्र को नरनारायणदेव की चित्र प्रतिमा कागज पर बनवा दूंगा, जिसे सभी लोग अपनी पूजा में रखकर प्रतिदिन पूजन करेंगे यही शास्त्र का प्रमाण है। यह हमारी आज्ञा मानकर सभी लोग नरनारायण की पूजा करेंगे तो हमारी पूजा हो गयी ऐसा हम मानेगे । हम नरनारायण को कहेंगे कि हे महाराज जो पंचवर्तमान का पालन करते हुए हमारी आज्ञानुसार, मेरे द्वारा प्रतिष्ठित आपकी मूर्ति का जो पूजन करेंगे उनका सर्वविध कल्याण कीजिएगा । उस मूर्ति में अखंडवास कीजिएगा। आप सभी यह निश्चित जानना कि यह मूर्ति श्री नरनारायणदेव से अलग है ऐसा समझ कर मूर्ति को अपूजित मत रखना।

इसीलिये इस संसार में दृढ ब्रह्मचर्यवाले एकमात्र श्री नरनारायण ऋषि है। ऐसा महाप्रभु का हमे आश्रय मिला है। इन परमात्मा का धीरे-धीरे आश्रय प्राप्त करके, भजन करके उनके समान निष्कामी बनना है।

गढ़डा प्रथम के ७४ वें वचनामृत में श्रीजी महाराज ने कहा है ..... हम तो श्री नरनारायणदेव के दास हैं। इन्हें जो

अच्छा लगे वही करना, इसी में कल्याण है। श्री नरनरायाणदेव के चरणारविन्द को छोडकर अन्यत्र कहीं प्रीति नहीं रखना। जो परमात्मा एक तपस्वी की तरह नित्य तप करते हैं। इन्हीं के तप, प्रभाव से हम सभी का कल्याण होता है। जो भगवान का भक्त नहीं है उसका कभी कल्याण नहीं होता है। यह बात सारंगपुर के सोलहवें वचनामृत में प्रतिपादित किया है। गढडा मध्य के २१ वें वचनामृतमें श्रीहरिने कहा है कि .... हमनें भी अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव का मंदिर बनवाया हैं। वे परमात्मा श्री नरनारायणदेव स्वयं जो कुछ दे - धरती, गाँव, सम्पति, सुख इत्यादि उसी में सन्तुष्ट रहना, किसी से बलात्कार पूर्वक मांगना नहीं।

गढ़डा के मध्य. २२ वें प्रकरण में श्रीहरि कहते हैं कि जब अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा करने गये थे उस समय हजारों भक्त जन आये हुए थे। लेकिन उनमें से तो मात्र हमारे हृदय में तो एकमात्र श्री नरनारायणदेव ही विराजमान हो सके। अहमदाबाद के चौथे वचनामृत में श्रीजी महाराज उद्‌बोधन करते है कि पुरुषोत्तम ऐसे श्री नरनारायणदेव सभी अवतारों के कारण है। उन में जिसे मरणभाव का विचार आवे उन्हें अनेकों बार शरीर को धारण करना पड़ेगा। भगवान की जो मूर्ति हुई तथा आज जो हो रही है, इसके बाद जो होंगी उनमें मरणभाव की कल्पना नही करना। अहमदाबाद के छठ्ठे वचनामृत में श्रीहरि करते है ..... इन नरनारायणदेव की मूर्ति को जो हमने प्रतिष्ठित किया है वह हमारी ही मूर्ति है, जिसे हमने सभी मूर्तियो में प्रथम प्रतिष्ठित किया है। इसीलिये हमसे अलग श्री नरनारायणदेव को कभी नहीं समझना। दोनो में अभेद संबंध है। ब्रह्मधाम के निवासी भी यही हैं।

जिसके ऊपर कभी क्रोध हो जाय उसे भगवान का भक्त जानकर, श्री नरनारायणदेव का आश्रित जानकर तत्काल मान-क्रोध का त्याग करके नमस्कार करके प्रार्थना करना लेकिन देह दृष्टि नहीं रखना, मैं बडा हूँ तथा उत्तम हूँ ऐसा भाव नहीं लाना। हमारे इष्टदेव श्री नरनारायणदेव भी मान-क्रोध का त्याग कर तप करते रहे है। तो ऐसे हम सभी श्री नरनारायणदेव के आश्रित उद्धव सम्प्रदाय के अनुगामी होने से क्रोध-मान का क्यों न त्याग करें। जेतलपुर के तीसरे वचनामृत में श्रीजी महाराज ने कहा है कि किसी हरिजन का या संत का द्रोह हो गया हो, या उसके प्रति दोष भाव आ गया हो तो उस समय श्री नरनारायणदेव, श्री स्वामिनारायण नाम का वारंवार उच्चारण करना चाहिए। पुनः जेतलपुर के चौथे वचनामृत में कहा है कि - श्री पुरुषोत्तम नारायण श्री नरनारायणदेव ऋषि के रूप में आप सभी को प्रगट रूप में मिले है, इसीलिये आप सभी सन्देह रहित होकर उन्हीं का आश्रय ग्रहण करके भजन करेंगे। उस में सभी का कल्याण होगा, जीवन आनंदित होगा।

जेतलपुर के पांचवे वचनामृत में श्रीजी महाराज ने अतिशय स्नेह के कारण उपदेश दिया है। उन्होंने कहा आज हमें आप सभी के लिये कुछ बात करनी है। भगवान के भजन के सिवाय दूसरा कोई अन्य साधन नहीं है। जिसे भगवान के भजन में श्रद्धा है उसकी उत्तरोत्तर वृद्धि होती है।

भगवान कहते है कि मैं भूत, वर्तमान, भविष्य तीनों काल की क्रिया को जानता हूँ। जगत की सभी क्रिया को जानता हूँ। माता के उदर में था उस समय भी मैं जानता था। इससे पूर्व जब यहाँ नही था, उस समय भी जानता था। आज भी सभी जानता हूँ। भविष्य को भी जानता हूँ। भगवान श्री नरनारायणदेव के रूप में मैं ही हूँ, मैं उन के मुख्यरूप को इसीलिये बताता हूँ क्यों कि अक्षरधाम के निवासी श्री नरनारायणदेव इस सभा में नित्य विराजमान रहते है।

सत्संग के कल्याणार्थ हम अपने रूप को लाखो रुपये खर्च करके शिखरी मंदिर श्रीनगर में श्री नरनारायणदेव की मूर्ति के रूप में सर्वप्रथम प्रतिष्ठित किये। हमारा जो दृढ आश्रय रखेंगे तथा दृढ विश्वास रखेंगे उनकी हम हर तरह से रक्षा करेंगे। जो सत्संग के नीति-नियम का पालन नहीं करेंगे हमारा आश्रय जिन्हें नहीं है, जिन्हे हममें दृढता नहीं है उनसे हमारा कोई लेन देन नहीं है।

इस प्रकार हमारे बडे महाराजश्री ने हम सभी के कल्याणार्थ हम सभी के मोक्षपद प्राप्ति हेतु अविरत प्रयत्न करके पुस्तक प्रकाशित किये है। आप का परिश्रम यदि हम सार्थक करें तो पूज्य महाराजश्री की अमिट छाप हम पर पडी है। ऐसा समझना चाहिए। श्रीहरि की अमृतवाणी का प्रतिदिन जो पाठ करेंगे उस पर श्रीहरि की कृपा बरसती रहेगी। हम सभी अपने पूज्य बड़े महाराजश्री के ऋणी है।

सत्संग सुरभि :

सभी का कल्याण करना है ।

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (केनेडा)

पश्चिम दिशा में सूरज-रक्तवर्णी लालीमा का प्रसरण करते हुए किसके दर्शन की प्रतीक्षा में अस्त होने की स्थिति में था । घेला नदी में वह रश्मि छाया अनोखी आभा का सर्जन कर रही थी ।

श्रीजी महाराज पांच-सात संत तथा चार-पांच हरिभक्तों के साथ स्नान करने हेतु घेला नदी की तरफ आ रहे थे । सूर्यदेव भी महाराज के दर्शन करके धन्यता का अनुभव कर रहें थे । घेला के किनारे एक कणबी किसान अपनी धून में ही गाँव की सरहद पर पहुंचने के लिए जल्दी में था । महाराज के कंधे सेउसका कंधा टकराया । परंतु वह किससे टकराया है । इसकी परवाह नहीं करते हुए वह चलता ही गया ।

महाराज के पीछे मूलजी ब्रह्मचारी चल रहे थे। किसान का हाथ पकड कर उसे रोककर कहा : "अरे ! देखता नहीं है ? अंधा हो गया हैं ? हमारे भगवान के साथ टकराया ।"

"हाँ अंधा हूँ सायद ! परंतु तुम्हारा भगवान भी तो अंधा ही है जिस कारण वह मेरे सामने भी नहीं देखता है ? रामावतार और कृष्णावतार में भी हमको अलग कर दिया । ग्वालाओं और वानरों का भी कल्याण किया और हमको भूल गये ।"

महाराज यह संवाद सुन रहे थे । उन्हों ने मनोमन संकल्प किया : "इस कणबी का और सभी निम्न जातिओं का मुझे कल्याण करना है । इस बार किसी को कल्याण से वंचित नहीं करना है ।

महाराजने किया भी वही कणबी, काठी, कोकी, सई, सुगर, कंसारा, सोनी, माली, सलाट, नाई, भील, मेर ऐसी अनंत काल से उपेक्षित जातिओं का उद्धार किया । इतना ही नहीं अपने आश्रित ब्राह्मण, बनिया और क्षत्रियों जैसे उच्च पवित्र संस्कार उनमे डाले, जीवन विशुद्ध बनाया । उनका आचरण निर्व्यसनी, निर्भय, नीतिमय, पवित्र और चारित्र्यशील बनाया । कीचड में से कमल की तरह ऐसी उपेक्षित जातिओं में से उत्तम भक्तों को तैयार किया । इतना ही नहीं खोज, वोरा, पठाण, जैसे मुसलमान तथा पारसी और अंग्रेज अमलदारों को भी अपना आश्रित करके पवित्र भक्त बनाया ।

यह एक सत कार्य उन्होंने किया । समाज के उपेक्षित ऐसे अनंत लोगो को सदाचार और पवित्रता के मूल्यो की शीख दी । अंतर में सत्संग और नीज धर्म का ज्ञान प्रदान किया ।

महाराज संध्या स्नान करके अक्षर ओरडी में पधारे । अपने आसन पर विराजे और मुलजी शेठ से पूछा : "आपको गणित कितनी आती है ?" "महाराज ! इस लोक में जितनी जरूरत पडती है उतनी आती है । फिर से पूछा : "आपको कहाँ तक गिनती आती है ?"

"महाराज, अंक लिखकर और उस पर सत्रह शून्य लगा दीजिए उनती गिनती आती है ।"

महाराज अनिमिष नैत्रों से कुछ सोच रहें थे । फिर बोले "हमें तो इस समय उससे भी अधिक अनंत लोगों का कल्याण करना है । पृथ्वी के मुमुक्षु मात्र का कल्याण करना है । हमारे साधु या हमारे आश्रित ऐसे हरिभक्तों के संबंद में रहकर उनका भोजन-पानी लेंगे और उनका कल्याण भी करेंगे । इस सत्संग में जन्म दिलाकर, सभी का कल्याण करना है।"

"महाराज की ऐसी सर्वजनहिताम, बहुजल दुखाम भाव देखकर सभी हरिभक्त चकित हो गये। महाराज का पृथ्वी पर जन्म लेने का हेतु अपने आप सिद्ध हो गया ।"

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव की दैनिक सांध्य थाल

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शाम के पक्के थाल कुछ समय से शुरु किए गये है । तो जो भाविक श्रद्धालु हरिभक्तोको ठाकुरजी को शाम का थाल करवाने की इच्छा हो वह कोठार में ५००- रुपये भर सकते हैं । शाम के थाल की प्रसादी नही दी जाती है ।

सत्संग बालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

महिमा एकाग्रता की

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

सारंगपुर के नजदीक में बोटाद गाँव है । वहाँ एक अच्छे सत्संगी रहते थे । उनका नाम शिवलालभाई था । वे व्यापार करते थे । उत्तम सत्संगी थे । जब वे पूजा करने बैठते तब जगत व्यवहार भूल जाते थे । परिणामत: उन्हे समय का ख्याल भी नहीं रहता, कितना समय भजन में चला गया । आज के समय में हाथ की घड़ी कही कहीं तो अवश्य नुकशान करती है । जैसे पूजा में बैठे हों उस समय १० मिनिट हो गया हो तो क्रिया में शीघ्रता होने लगती है । इसलिये हाथ में घड़ी बांधना ही नहीं चाहिए ।

एक गाँव में एक सत्संगी वृद्ध रहते थे । जब गाँव में संत कथा करने आते उस समय वह सत्संगी वृद्ध कथा में खडे हो जाते । पुराने जमाने में दीवाल घडी होती थी, वह वृद्ध खडा होकर अपने दुपट्टे से घड़ी को ढंक देता था । आने वाले संत पूछते आप क्यों घड़ी को ढंक देते है तब वृद्ध कहते कि स्वामीजी आप लोग केवल आठ-दश दिन तक ही स्कर कथा करते हैं, जिसमें दश बजते ही अपनी कथा पूर्ण कर देते हैं, यह घड़ी की देन है, जिसे आप देखते रहते है और जब दश बजा कि कथा बंद, इसीलिये हम दुपट्टे से घड़ी को ढंक देते है ।

जब पूजा करने बैठे तब घड़ी की तरफ लक्ष्य नहीं रखना चाहिए । शिवलालभाई व्यापारी थे फिर भी जब पूजा करने बैठते, उस समय व्यापारिक विचार को छोड़देते, बाह्य प्रवृत्ति का त्याग कर तन्मय हो जाते थे ।

एकबार गोपालानंद स्वामी चार-पांच दिन के लिये बोटाद गये थे । शिवलालभाई पूजा करने बेठते उस समय स्वामी जब चार-पांच मिनट बीत जाता तब उनके आगे आकर बैठ जाते थे । शिवलालभाई को होता था कि स्वामी की मेरे ऊपर अत्यंत कृपा है इसलिये मेरे आसन के पास आकर बैठ जाते हैं । लेकिन यह क्रम तीन दिन चला चौथे दिन स्वामीजी शिवलाल की आधी पूजा में से उठकर चले गये । बाद में शिवलाल की पूजा पूरी हो गयी तो स्वामी को प्रणाम करने गये और स्वामी से पूछे स्वामी, आज आप बीच में ही क्यों चले आये । तब स्वामीने बडे प्रेम से कहा शिवलाल ? आप की पूजा में आपका मुख देखने नहीं बैठता था बल्कि आपके पूजा में इतनी अधिक तन्मयता होती थी कि साक्षात् स्वयं भगवान स्वामिनारायण आकर विराजमान हो जाते थे, इसलिये हम आपकी पूजा में आकर बैठते थे । आज बीच में मैं क्यों चला आया इसका कारण यह है कि आज पूजा के बीच में आपके मन में कुछ दूसरा विचार आया था, जिससे तन्मायता नहीं रही और भगवान स्वामिनारायण चले गये, इसी कारण मैं भी उठकर चला आया । अब विचार करो कि बीच में क्या याद कर रहे थे । तुरंत उन्होंने कहा हाँ स्वामी मैं बीच में यह विचार कर रहा था कि बम्बई से कोई व्यापार के लिये व्यापारी आने वाला है । ऐसा संकल्प हुआ था । तब स्वामी ने कहा एकाग्रता ही भक्ति में मूल साधन है । जब पूजा करने बैठे, तब भले ही भगवान सन्मुख हों या माला फेर रहे हो लेकिन एकाग्रता न हो तो यही स्थिति होती है । इसलिये एकाग्रता से की गयी पूजा, एकाग्रता से की गयी प्रार्थना, भजन, भक्ति, ध्यान सभी भगवान स्वामिनारायण का प्रत्यक्ष कराने वाले है ।

•

कृतघ्नी नहीं होना चाहिए

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

भगवान स्वामिनारायण प्रथम के दशवें वचनामृत में अपने वन विचरण के समय तिरुपति से सेतुबन्ध रामेश्वरम् जाते समय रास्ते की एक घटना दर्शित किये हैं । अथवा हमें सचेत होने के लिये उपदेशात्मक चरित्र किये हैं । उस व्यक्ति का नाम था सेवक राम जिसका नाम उन्होंने कृतघ्नी के रूप में दर्शाया है । इसीलिये वचनामृत में अपने भक्तों को उपदेश देते हुए कहैं है कि हे भक्तजन आप सभी कभी कृतघ्न का संग मत करना । भगवान स्वामिनारायण को कृतघ्नी अच्छा नहीं लगता है । कृतघ्नी किसे कहा जाय इसे समझ लेना चाहिए ।

गिरीश नामक एक पवित्र ब्राह्मण था । वह बहुत गरीब था । रहने के लिये पुराना एक मकान था । उसे धन कमाने

की इच्छा हो गयी। गिरीश अपना पुराना मकान बेच कर उसी धन से म्लेच्छ देश में धन कमाने चला गया। परंतु म्लेच्छ देश में धन कमाने की इच्छा पूर्ण नहीं हुई। लेकिन वहाँ की म्लेच्छ स्त्री के साथ विवाह कर लिया। अब वह आचार भ्रष्ट हो गया। स्त्री के हाथ मांसाहार करने लगा। मदिरापान करने लगा। वह अपने ब्राह्मणत्व से च्युत हो गया। उसके धन कमाने की इच्छा पूर्ण नहीं हुई। अब वहाँ से परदेश कमाने चल दिया। नाव में बैठकर परदेश चल दिया। बहुत भटकने के बाद भी उसे काम नही मिला। घूमते-घूमते गिरीश भयंकर जंगल में फंस गया। उसे रास्ता नहीं मिल रहा था। भूख-प्यास से परेशान होकर इधर उधर भटक रहा था, उसी समय वहाँ नाडीजंग नामक बगला मिल गया। उसने गीरीश की भूख-प्यास दूर की। बगला ने पूछा यहाँ जंगल में क्यो आये हो, तब उसने बताया मैं धन कमाने की इच्छा से आया था लेकिन जंगल में आकर फंस गया। यह सुनकर नाडीजंग ने अपने मित्र का पता दिया। वह पता लेकर गिरीश हंशध्वज नामवाले गाँव में गया। वहीं पर हिरण्याक्ष नामक शेठ मुलाकात हुई। नाडीजंग का संदेश बताया, जिससे मित्र का भेंजा हुआ है यह समझकर उसे अपने यहाँ नौकरी में रखलिया। अब वह वहाँ सुखी हो गया खूब धन कमाया। गिरीश ने अपने देश आने के लिये हिरण्याक्ष से अवकाश मांगा। उसने जाने की आज्ञा दे दी। बाद में मित्र नाडीजंग के पास मिलने गया। नाडीजंग गिरीश को रात्रि का भोजन कराता है। बाद में दोनो एक साथ सो जाते है। अति मलिन आहार के कारण गिरीश अपने उत्तम विचारों को नष्ट कर देता है, परिणामत: विवेक भ्रष्ट होकर अपने मित्र नाडीजंग को जलती लकड़ी से मार डालता है। बाद में अपने आहार के लिये उसे साथ ले लेता है। इधर हिरण्याक्ष प्रात: अपने मित्र को जब नही देखता है तो उसे खोजने के लिये सेना भेंजता है। सैनिक खोजते हुए गिरीश के पास नाडीजंग की मृत शरीर पा जाते है। उसे पकड़कर हिरण्याक्ष के पास लाते है, हिरण्याक्ष के क्रोध की सीमा नहीं रहती। जिसने तुम्हारी सहायता की उसीकी तुमने हत्या की तू कृतघ्नी है। हिरण्याक्ष शेठ राक्षसों को बुलाकर गिरीश को मारकर खाने का आदेश दे दिया। राक्षस गिरीश को मार डाले लेकिन उसकी मांस को नहीं खाये। क्योंकि कृतघ्नी के मांस खाने से राक्षस भी डरते हैं। कृतघ्नी महापापी कहे जाते है। उसी समय आकाश मार्ग से कामधेनु जा रही थी। उसके स्तन से दूध नाडीजंग के मुख में गिरता है। नाडीजंग जीवित हो जाता है। उस समय इन्द्र वहाँ आकर नाडीजंग के मृत्यु एवं जीवन का कारण बताते है। नाडीजंग को ब्रह्मा का शाप था जिससे उसकी मृत्यु हुई तथा उन्हीं के आशीर्वाद से जीवन मिला। जीवित होकर अपने मित्र गीरीश को खोजता है, उसके मित्र हिरण्याक्षने सभी बाते बतायी, फिर भी वह मित्र गीरीश को जिलाने के लिये इन्द्र से आग्रह करता है। इन्द्र अमृत मुख में डालकर गिरीश को जीवित करते है। गिरीश नाडीजंग की माफी मागता है। वहाँ सेअपने देश चल देता है। बाद में अवशिष्ट जीवन पवित्रता से यापन करता है। मृत्यु के बाद उसे यमदूत भयंकर यमयातना देते है। नरक में डाल देते हैं गिरीश की सद्गति नहीं होती।

मित्रो ! किये उपकार को जो भूलजाता है उसे कृतघ्नी कहते है। कृतघ्नी जैसा कोई पापी नहीं है। इसलिये ऐसे कृतघ्नी को पहचान कर उससे दूर रहें। उसका संग नही करना उसके साथ मित्रता नहीं करना चाहिए।

•

आत्म स्वरुप आचार्यश्री

"अंतर तिमिर नारा करी
आपे दिव्य प्रकाश
आचार्यश्रीनी कृपा दृष्टिथी
कपाई जाय भव-पाश
आचार्यश्री नयी देहस्म
छे स्वयं आत्मस्वस्म
शिष्योनुं सौभाग्य
पावन परम अनूप
लोह-सदृश अम जीवो
आचार्यश्री पारस-संकल्प
सदुपदेश-संस्पर्श थी
करे अम काया-कल्प
जीवननुं जे सत्य छे
एनु करी संधान
पडता-वेरभाव विनाशे
हरी लेता-अज्ञान
संसारमां सरसा रहे,
रहेता सदा निर्लेप
जेम जलमा कमल रहे
तेम एकदम अलेप
पूर्णकाम निष्काम तेओ
करुणाना आगार
एमनी वाणी मां निहित,
धर्म कर्मनो सार.

- प्रो. महादेव धोरियाणी (राजकोट)

?????????????? प्रश्न पेटी ??????????????



साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ प्रेमी भक्त के मनोरथ पूर्ण करने हेतु भगवान अवतार धारण करते हैं यह बात श्रीजी महाराजने किस वचनामृत में कही है ?

प्रश्न : २ प्रत्यक्ष भगवान तथा प्रत्यक्ष संत को ही कल्याण का दाता बताया गया है तथा परोक्ष भगवान को परोक्ष संतो का माहात्म्य है ऐसा प्रत्यक्ष भगवान को परोक्ष संत का माहात्म्य है श्रीजी महाराजने अपने मुख से किस वचनामृत में वर्णन किया है ?

प्रश्न : ३ ब्रह्माने मनुराजा और शतरूपा का युगल उत्पन्न किया और उनको सृष्टि उत्पन्न करने को कहा । उन्होंने आकर प्रथम किसकी उत्पत्ति की जिससे चारों धाम का अंतर समान है ?

प्रश्न : ४ किसीकी गुह्यवार्ता को कही भी प्रकाशित नहीं करने की बात शिक्षापत्री के किस श्लोक में की गई हैं ?

प्रश्न : ५ "विभीषण ने वालमां रे दु:ख टाकी कर्यो दास पांडवोनो आवी वनमां रे, पलमां टाण्यो दु:ख रे" यह पंक्ति किस पद की है । इसके रचयिता कौन हैं ?

प्रश्न : ६ "खावा-पीवानुं खूब ज जडतु, वस्त्रनो नहि पार रे, जोइए तेवा जोडा जडता तके तके तैयार रे..... आगे की पंक्ति पूर्ण कीजिए और इसके रचयिता का नाम बताइए ?

प्रश्न : ७ दशरथ राजाने मखोडा घाट पर किस हेतु से कितने वर्ष यज्ञ किया था ?

अक्टूम्बर २००६ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों का नाम ।

(१) वसंतामासी, चंदनामौसी । (२) प्रथित पांडे की पत्नी का नाम वचनबाई था । उन्हों ने भक्तिदेवी से कहा "है छोटीबा" आप इस कुएँ पर जल भरने जाना । परंतु किसी भी दिन देर-सबेर मत जाना । क्योंकि उस कुएँ मेंकई भूत रहते हैं । (३) भुज के शिल्पी नारायणजीभाई सुतार के पास । (४) पींगल भाषा भूजनगर में पढ़कर सम्राट कवि हुए । (५) गुरु, देव, राजा और सभा में पैर पर पैर चढ़ाकर नहीं बैठना चाहिए जैसी आज्ञा शिक्षापत्री में श्लोक नं. ७० में की गई है । (६) संवत १८५७ में प्रथम लोज गाँव में भिन्न सभा प्रारंभ कि गयी । (७) जन्म धारण करने के बाद २२५ वर्ष पूर्ण होने पर दिव्याति दिव्य महोत्सव अहमदाबाद देश भगवान की "जन्मभूमि में जन्म जयंती" छपीया (यु.पी.) में मनाया गया और उस महोत्सव का नाम रजत द्विशताब्दी जन्मजयंती महोत्सव रखा गया ।

१. अमृतलाल कचरादास (सोजा)
२. गोरधनभाई शंकरदास (सोजा)
३. कंचनबहन बाबुभाई पटेल, निलेष, शैलेष
४. रेखाबहन कीर्तिभाई (ऊँझा)
५. डाभी मफाजी सरदारजी (डांगरवा)
६. पटेल शारदाबहन कांतिभाई (नांदोल)
७. परमार शांतिभाई वालाभाई (बकोल)
८. परमार अल्पेश एस. (बकोल)
९. परमार सोनलबहन एस. (बकोल)
१०. चोटलीया पुष्पाबहन दयालजीभाई (घूलकोट)
११. चोटलीया मनीषाबहन दयालजीभाई (घूलकोट)
१२. चोटलीया रंजनबहन दयालजीभाई (घूलकोट)
१३. सोनी भगवानदास (मोरबी)
१४. आडुबा माधवजी दरजी (मोरबी)
१५. अजय घनश्यामभाई पटेल (नांदोल)
१६. कैलाश विष्णुभाई पटेल (नांदोल)
१७. अंजना विष्णुभाई पटेल (नांदोल)
१८. साकरबहन नटवरभाई पटेल (नांदोल)
१९. वीणाबहन भावसार (नवरंगपुरा)
२०. अरविंदाबहन भावसार (चांदलोड़ीया)
२१. हसुमतीबहेन ठक्कर
२२. सोनी मालतीबहन कलमेशभाई टीकर (हलवद)
२३. हरिताबहन (उस्मानपुरा)
२४. कंचनबा तथा कुंदनबा (मेडा)
२५. पटेल मेधाबहन कलमेश (कुहा)
२६. धीरूभाई काछडीया (बापुनगर)
२७. नीताबहन शींगाका (बापुनगर)
२८. रिंकु खीचड़ीया (बापुनगर)
२९. राधिका काछड़ीया (बापुनगर)
३०. विनोद पी. पटेल (वहेलाल)
३१. पटेल हेतलबहन मयुरकुमार (कुहा)
३२. सां.यो. शिल्पाबा तथा शीतलबा (सुरेन्द्रनगर)
३३. मिराणी स्मितल घनश्यामभाई (पाटडी)

नोंट : प्रश्नपेटी का उत्तर प्रत्येक महीने की २२ तारीख तक आना अनिवार्य है । इसके बाद के आए हुए उत्तर का नाम लिखा नहीं जायेगा । जिसको सभी लोग जानलें ।

।। भक्तिसुधा ।।

यथार्थ समझ

- सांख्ययोगी कमलाबा तथा उषाबा

(सुरेन्द्रनगर)

अनंतकोटि ब्रह्मांड के अधिपति पुरुषोत्तम नारायण अनेक जीवों के कल्याण हेतु तथा एकांतिक धर्म का संस्थापन करने हेतु और अपने प्रेमी भक्तों के मनोरथ पूर्ण करने के लिए इस पृथ्वी पर पधारे थें। जो निष्ठ भक्त हो उसे महाराज जिस स्थिति में रखतें हैं उसमें वे प्रसन्न रहते है। परंतु भगवान को कभी दोष नहीं दे कि, "महाराजने मुझे यह दुःख क्यों दिया ?" मैं भजन करता हूँ, धर्म का पालन करता हूँ फिर भी मुझे दुःख क्यों आता है। ऐसा भगवान के भक्त को संकल्प नहीं होना चाहिए। हरि इच्छा से जो सुख दुःख आता है उसे सहन करना चाहिए। भगवान जो करतें हैं अच्छा ही करतें है। ऐसी समझ जिसको हो उसे एकांतिक भक्त कहतें हैं। वचनामृत में भी महाराज कहतें हैं कि त्यागी गृही का कोई मेल नहीं है। जिसकी समझ बड़ी वह बड़ा होता है। हमें सर्वोपरि स्वामिनारायण भगवान मिलें है। जिनके दर्शन देवताओं कोभी दुर्लभ है। देवगण महाराज को प्रार्थना करतें है। नमस्कार करने से माया के मुगट की मणी भी झर गयी। फिर भी भगवान के दर्शन नहीं हुए। उन महाराज का हमको चौबीस घंटे दर्शन होता हैं। तो फिर हम सभी से भाग्यशाली कौन है। संसार में तो सुख दुःख तो आते ही रहतें है। परंतु दुःख देखकर ऐसे महाराज को छोड़कर किसी दूसरे देव-देवियों का आश्रय करना नहीं चाहिए। हमारे स्वामिनारायण भगवान प्रत्यक्ष है। सत्संग में प्रत्यक्ष विचरण करते हैं। भक्तों की संकट में रक्षण करतें है। दूसरे भक्तों के द्वारा भी हमारी देखभाल करते हैं। परंतु हमारी निष्ठा उत्तम और पक्की होनी चाहिए।

बोटाद के बगल में एक गाँव में गीगाभाई धांधल नामक एक एकांतिक भक्त थे। व्यवहार में वे साधारण थे। परंतु भक्त की समझ बहुत ऊँची थी। वे दोनो आंखो से अंधे थे। परिवार में एक पुत्र और पुत्री थी। छोटी उंमर में पुत्री विधवा हो जाने के कारण वह पिता के घर रहकर पिता की सेवा करती थी। पुत्र खेती करता और गीगाभाई भगवान का भजन करते थे।

उस में भगत पर आपत्ति आ पड़ी। युवान कमाऊ पुत्र बिमार हो गया। भक्त पुत्र की खटिंया के पास बैठकर माला करते रहते थे। भगवान की बातें करते। पुत्र को महाराजने दर्शन देते हुए कहा कि तुम्हारा आयुष्य पूर्ण हो गया है। हम तुम्हें ले जाने आये हैं। तुम अपने पिताजी से पूछ लो। वे प्रसन्न होकर मान जाएँ तो हम तुम्हें ले जाएँगे। यह सुनकर गीगा भगतने कहा, "बेटा तुम किसके साथ बातें कर रहे हो ?" पुत्रने कहा "पिताजी, महाराज मुझे अपने साथ ले जाने आये है। आप मुझे आज्ञा दें तो मैं धाम में जाऊँ।" गीगा भगतने कहा "बेटा ! महाराज लेने के लिये आये हैं तो प्रसन्नता से जा हमारी चिंता मत करना। राजी-खुशी पिताजी ने स्वीकार्य कर लिया। महाराज उसे धाम में ले गये। सगे-संबंधी अडोशी-पडोशी सभी अंतिम क्रिया करके शाम को बैठने आये और खेद करते हुए कहने लगे भक्त आप अंधे हो। ऊपर से विधवा पुत्री है, काम करने वाला घर में कोई भी नहीं बचा। तब भगतने कहा "देखिए भाइयों ! मेरे पुत्र को भगवानने अपने पास बुलालिया।" देर-सबेर सभी को जाना ही है। उसका शोक करना नहीं चाहिए। इस प्रकार सभी से भगत धैर्य की बात करतें। महाराजने वचनामृत में भी कहा है त्यागी-गृही का कोई मेल नहीं है। जिसकी समझ बड़ी वह श्रेष्ठ है।

घर में पिता-पुत्री दोनों रहते। भगवान के स्मरण के साथ व्यवहार चलता इस प्रकार छ मास हो गये। तब पुत्री बिमार हुई। उसे भी महाराज अपने साथ अक्षरधाम में ले गये।

तब सगे-संबंधी कहने लगे "भगत आप अंध हो और आपके पुत्र-पुत्री को महाराजने अपने पास बुलालिया। तब भगत कहते हैं, मेरी चिंता महाराजने कम कर दी है। मुझे सदैव यह चिंता सताती थी की मेरे जाने के बाद मेरी युवान विधवा पुत्री का क्या होगा ? परंतु मुझसे अधिक मेरे भगवान को मेरी चिंता है। इस कारण उन्होंने मुझे चिंता मुक्त कर दिया।"

बाद में महाराज ने बोटाद के शिवलालभाई को दर्शन देकर कहा कि, हम गीगा भगत की पुत्री और पुत्र को हमारे धाम में ले गए हैं। तब शिवलालभाई ने कहा तो फिर अंध भगत का क्या होगा। तब महाराजने कहा कि यही बात हम आप को बताने आये है उनको संभालने की जिम्मेदारी अब आपकी है। तब शिवलालभाई ने कहा, अच्छा महाराज, हमारे बडे भाग्य कि उस भक्त की सेवा मुझे मिली। मैं उसमें कोई कमी नहीं रहने दूँगा।

बाद में शिवलालभाई भगत के गाँव में जाकर मिले और महाराज के दर्शन की बात बताई और एक सुपात्र बाई को भगत के घर में रसोई बनाने हेतु रख दिया।

शेठ के यहाँ ५००/- रु. जमा करवाए। उसके बाद समय-समय पर शिवलालभाई भगत की पूछपरछ करने आ जातें। जरुरी रकम भिजवा देते थें। और गीगा भगत शिवलालभाई का अहोभाव मानते थे। "जिसे जिसका आश्रय होता है वह उसकी लाज रखता है।" इस न्याय पर महाराजने अंत तक शिवलालभाई द्वारा भगत का ध्यान रखवाया। बाद में कुछ समय बाद महाराज गीगा भगत को अपने धाम में ले गये।

"इस प्रकार महाराजने अपने एकांतिक भक्त की संकट में सहायता की। परंतु भक्त जो दुःख में भगवान को न भूले भगवान बिना किसी दूसरे देव-देवियों का आश्रय न करें तो भगवान उस भक्त का हर स्म में ध्यान रखते है। दूसरे भक्तों के द्वारा भी ध्यान रखवातें है। इसीलिए भगवान का दृढ आश्रय रखना चाहिए। महाराज की आज्ञा के अनुसार आचरण करना चाहिए। और तभी भगवान हमारी हर संकट में सदैव रक्षा करते हैं।"

दुर्लभ में दुर्लभ मनुष्य जन्म प्राप्त हुआ है। तो जीव के कल्याण के लिए तप, जप, व्रत, दान, पुण्य कर लेना चाहिए। जिससे एकांतिक भक्त बन कर श्रेष्ठ समझ प्राप्त करके मनुष्य जन्म सार्थक बना लें।

●

सुख में भगवान को भी भूल जाते है

- पुष्पाबहन केराई (अंजार-कच्छ)

सुख और दुःख यही तो संसारचक्र के दो पहलु हैं। जो मनुष्य के कर्म के आसपास फिरतें रहतें हैं। सुख अच्छे कर्म का फल है और दुःख खराब कर्मो का फल है।

सामान्यतः मनुष्य दुःख में ही जगतपिता परमात्मा को याद करता है। भगवान का वास्तविक अस्तित्व और माहात्म्य दुःखमय पलो में बहुत अच्छी तरह से समझ में आता है। सुख में ज्यादातर जगतकर्ता प्रभु को हम अलग रखते हैं और यही हमारी कमजोरी है .... जिस सुख चेन में भगवान विस्मरित हो जाते है वह सुख जीवन में पतन की राह पर ले जाता है। सुख में भगवान की अवगणना ही घोर दुःख की सूचना है।

माता के गर्भ में जीवात्मा जब जड़ मूल से भरे संकुचित स्थान में अनेक कष्टों को भोगत है तब वह संपूर्ण लाचार होता है। दुःख के दरिया में फंसा मनुष्य हो तब प्रभु को हार्दिक प्रार्थना करके बाहर निकालने की प्रार्थना करता है। और प्रभु मय जीवन व्यतीत करने की बाते करता है। गर्भाषयकी बेडियों को तोड़कर प्रभु-इच्छा से बाहर आता है। और 'उवां, उवां' के उच्चार के साथ वहसमस्त भूल जाता है। वह उसकी सबसे बड़ी भूल है।

बाद में वह सुखसाहिबी में प्रसरित हो जाता है। अपने सुखचैन के लिये रोता है, हठ करता है। रुठ जाता है। मा-बाप के द्वारा समग्र सुख-चैन का भोग करता है।

बड़ा होता है तब अपने सुखचैन के लिए मा-बाप को छोड देता है। जब तकलीफ पडती है तब ईश्वर को याद करता है। संकट के समय प्रार्थना करता है। भगवान की अनेक मन्नतें मानता है। कथा सुनता है। दुःख में वह अपने जीवन में की गयी भूलों में नजर करता है। दुःख में उसे जीवन की सच्ची राह दिखाई देती है। दुःखद वातावरण में मानव थोड़ा अधिक समजदार हो जाता है। जो ज्ञान उसे वर्षो से शास्त्रों या गुरुओं द्वारा प्राप्त नहीं होता उसे वह ज्ञान दुःख के समय मे अपने आप मिल जाता है। सुख में जिसकी सीढियां कभी नहीं चढा था, अब वह दुःख में भगवान की सीढियाँ भी चढ़ने लगता है।

भगवानने अच्छे सुखदायक दिन दिये स्वयं को भगवान को भूलने के लिए दोष देता है। दुःख की भट्ठी में जलता हुआ मनुष्य अपने सुख के दिनों में किये कुकर्मो को याद करता है। और उसके हिस्से मेंआये दुःखद दिनों में वह प्रभुमय बनने की कोशिश करता है। अच्छे दिनों में उसके पास सत्संग भक्ति के लिये कोई समय नहीं होता था। जो समय होता था वह उसे पार्टियों, टीवी और हील स्टेशनों में जाकर व्यर्थ बिता देता है। मंदिर में वह कभी-कभी भगवान की मूर्ति को नमन करके तात्कालिक खाना पूर्ति करता था। जब खराब दिन आते हैं तो कथा, वार्ता, सत्संग, भक्ति में लंबे समय तक व्यस्त रहने लगता है। भगवान की आरती - पूजा में भी पूर्ण रस लेता है। अपनी शान को ठिकाने लाने के लिये अपने बुरे दिनो को भी भगवान का आशीर्वाद मानता है। और अपने जीवन में नीति, नियम लाकर सही अर्थ में भगवान का शरण लेता है। प्रभु की मीठी छांया में उसे सुख और दुःख मृगजल के समान ज्ञात होते है।

उसे यथार्थ स्म से पता चलता है कि सुख और दुःख तो प्रभु द्वारा प्राप्त हुए अमूल्य जीवन के दो पहलु हैं। दुःख ज्यादा समय नहीं रहनेवाला और सुख अधिक समय नहीं चलने वाला किसी भी संयोग में भगवान को भूलना नहीं चाहिए। यही यथार्थ जीवन है। प्रभु स्मरण बिना जीवन व्यर्थ है।

सत्संग समाचार

श्री नरनारायणदेव के सांनिध्यमें प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का प्राकट्योत्सव मनाया गया

विजया दशमी के शुभ असवर पर श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशेलन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ३५ वाँ प्राकट्योत्सव प.पू. लालजी महाराजश्री १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्ष स्थान पर सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में धूमधाम से मनाया गया है।

पू. महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी एवं मूली मंदिर के विद्वान संत मंडलने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ३५ वें प्राकट्योत्सव के प्रसंग पर अपनी शुभ भावना-शुभेच्छा प्रदान की तथा पुष्पहार-आरती करके शुभ कामना व्यक्त की। शहर और गाँवो से पधारे हजारो भाविक भक्तोंने अपने प्राण प्रिय प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को पुष्पहार प्रदान करके आशीर्वाद प्राप्त किया। अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री ने दिव्य आशीर्वाद प्रदान किये। प.पू. बडे महाराजश्री मान सरोवर यात्रा पर पधारे थे। पू. महंत स्वामी के मार्गदर्शन के अनुसार संतोने सुंदर व्यवस्था की थी।

- कोठारी धर्मप्रकाशदास

अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में शारदा पूजन अन्नकूट मनाया गया

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में कालुपुर श्री स्वामिनारायणमंदिर में समूह शारदा पूजन ता. २२-१०-२००६ के दिन प्रसादी के सभा मंडप में विद्वान पंडितो के साथ पू. महंत शा. स्वामी निर्गुणदासजी ने करवाया। (प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की दादीमां अक्षरनिवासिनी होने के कारण) हजारो हरिभक्त व्यापारी भाईयोंने अपने व्यापार-उद्योग की पुस्तक पूजन करवाकर दिव्य लाभ लिया था। आज सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का महा अन्नकूट बनवाया गया था। दोहपर १२ से ५ बजे तक अन्नकूट दर्शन करने हेतु शहर और बाहर गाँव के हजारों हरिभक्तों ने दर्शन का महा लाभ लिया। नूतन वर्ष के शुभ दिन ठाकोरजी की मंगला आरती की गई। रात्रि पर्यन्त दर्शनार्थियों की भीड अधिक हो गई। प्रसादी के सभा मंडप में मंदिर के गौरने सं. २०६३ के वर्ष फल को पढकर सुनाया। पू. महंत स्वामी के मार्गदर्शन के अनुसार कोठारी स्वामी और संत मंडलने लाईट डेकोरेशन अन्नकूट प्रसाद वितरण, शारदा पूजन आदि का सुंदर आयोजन किया था।

- शा. विश्ववल्लभदास

प.पू. आचार्य महाराजश्रीके ३५ वें प्राकट्योत्सव प्रसंग पर कलोल युवक मंडल की तरफ से श्री स्वामिनारायण अंक के सभ्यो को सौजन्य भेट

अहमदाबाद मूली-भूज के शिखरबद्ध एवं हरि मंदिरो में भी इस निमित्त धून का आयोजन किया गया। ता. १-११-२००६ के प्रातः ८-०० बजे श्रीहरि के तीनो अपर स्वरूपो के सानिध्य में धून की पूर्णाहुति हुईथी। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के ३५ वें प्राकट्योत्सव के प्रसंग पर कलोल श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की तरफ से श्री स्वामिनारायण सामायिक के ३५ वंश परंपरागत सभ्यों को ५०% अर्थात् इस प्रसंग की खुशाली में जो नये सभ्य बने है उनको रु. २५०/- कलोल युवक मंडल की तरफ से अर्पण किया गया। जिस कारण ३५ हरिभक्त रु. २५०/- देकर वंश परंपरागत सभ्य बन गये। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कलोल श्री नरनारायणदेव युवक मंडल पर अति प्रसन्न होते हुए आशीर्वाद प्रदान किये।

हमारे मंडल और बडे हरिभक्तों को वास्तव में अच्छी प्रेरणा मिलेगी। धन्य है कलोल युवक मंडल। *- महंत स्वामी*

कालुपुर मंदिर में शरद पूजन किया गया

आश्विन शुक्ल-१५ शरद पूर्णिमा के शुभ दिन पर अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के विशाल प्रांगण में शरदोत्सव का सुंदर आयोजन किया गया था। संत हरिभक्तो की विशाल सभा में

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में परम पूज्य मातुश्री के अक्षरधाम गमन के निमित्त पर अखंड मंत्र जाप

सर्वोपरि ईष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान के द्वारा प्रस्थापित उत्तरदेश श्री नरनारायणदेव पीठ के छठ्ठे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के और समस्त संप्रदाय के परम पूज्य मातुश्री के दिव्य अक्षरधाम गमन के निमित्त पर ता. ३१-१०-२००६ के दिन पर कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में प्रात ८-३० बजे प.पू. बडे महाराजश्री और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धून का शुभारंभ किया गया। अखंड २४ घंटे आयोजीत महामंत्र धून में देशभर के संत-महंत और बाहर के गाँव के हजारो धर्मकुल प्रेमी हरिभक्त धून में जुड गये थे। बहनो की हवेली में भी सांख्ययोगी और कर्मयोगी बहने भारी संख्या में जुडी थी।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे तब उत्सव में अलौकिकता व्याप्त हो गई। श्री नरनारायणदेव उत्सव मंडल ने उत्सव सुंदर धून की थी। श्वेत वस्त्रों के साथ सुंदर-दिव्यतम मंडप में ठाकुरजी विराजमान हुए थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्रीने ठाकुरजी की आरती उतारकर सभी को दर्शन का दिव्य लाभ दिया। यहाँ उत्स पूर्ण करके पू. महाराजश्री और पू. लालजी महाराजश्री नारायणघाट उत्सव करने पधारे। कोठारी स्वामी और

संत मंडलने सुंदर व्यवस्था की थी ।

- जयेश पटेल

नारायणघाट मंदिर में शरदोत्सव मनाया गया

पवित्र पुण्य भूमि नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर में शरद पूर्णिमा के शुभ दिन पर रात्रि को ९ से १२ तक मंदिर के विशाल प्रांगण में शीतल चांदनी में शरद उत्सव के अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में संप्रदाय की मर्यादा के अनुसार भाईओं और बहनो ने सुंदर रास किया । भाईओं के साथ संत भी रास में जुड गये । श्री जयेसभाई सोनी की मधुर आवाज में रास खेला गया । कालुपुर, कांकरिया आदि मंदिर के संत और आस-पास के विस्तार के हरिभक्त बड़ी संख्या में लाभ लेने हेतु पधारे थे । खेलैया भक्तों को प्रोत्साहन उपहार दिया गया ।

प्रासंगिक सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने (कच्छ) प.भ. नारणभाई द्वारा प्रकाशित 'सहजानंद स्वामी चरित्र' पुस्तकका विमोचन किया था । उसके बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ हरिभक्तों ने दीपक जलाकर ठाकुरजी की समूह आरती उतारी थी ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने अंत में अपने आशीर्वचन में बताया कि जगत में नाचगान करने से कुछ हांसिल नहीं होता है । महाराज को स्मृति के साथ उठाया गया एक कदम भी बहुत पुण्य प्रदान करता है । महाराज को प्रसन्न करने का यह विशिष्ट दिन है । आज के दिन पू. बापुजीने सभी सत्संगी हरिभक्तो के सुखी होने की शुभ भावना से हरिभक्तों के साथ मानसरोवर में स्नान किया । इस प्रकार अपने आश्रितजनो के लिये हमारे पू. महाराजश्री किसी भी प्रकार का कष्ट सहन करके भी अनपे भक्तों का कल्याण करके उनको प्रसन्न करते हैं । महंत शास्त्री धनश्याम स्वामी और संत मंडलने सुंदर आयोजन करके पू. महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद प्राप्त किये । सभी को दूध पौंआ प्रसादी के रूप में दिया गया ।- *गोरधनभाई सीतापरा*

एप्रोच बापुनगर मंदिर में चातुर्मास के उत्सव धूमधाम से मनाये गये

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद और महंत स्वामी लक्ष्मणदासजी की प्रेरणा से चातुर्मास में आनेवाले सभी उत्सव झूलोत्सव, श्री गणपतिजी की पालकी का उत्सव, जन्माष्टमी शरदोत्सव, दीवाली का अन्नकूट आदि उत्सव धूमधाम से मनाये गये । श्री घनश्याम महाराज के पूजारी स्वामी सुंदर शृंगार करके दर्शन करवाते थे । श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने भी अच्छी सेवा प्रदान की । हर शनिवार को युवक मंडल द्वारा सभा का आयोजन होता है । यहाँ हजारो हरिभक्त दर्शन तथा सभा का लाभ लेकर सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव की निष्ठा को दृढ बनाते हैं ।- *गोरधनभाई सीतापरा*

श्री स्वामिनारायण मंदिर (जीवराज पार्क)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क में हर रविवार शाम को ५ से ७ बजे तक सत्संग सभा का सुंदर आयोजन होता है । उस सत्संग सभा में अपने संत भजन-कीर्तन कथा-वार्ता करतें है । जिसका लाभ हजारो हरिभक्त लेने आते हैं ।

ता. १७-९-२००६ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ३५ वी सत्संग सभा क्लिवलेन्ड (अमेरिका) में प.भ. प्रकाशभाई बी. पटेल के यजमान पद पर संपन्न हुई । जिसमें सुप्रसिद्ध कलाकार जयेशभाई सोनी ने कीर्तन गाये । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री इस प्रसंग पर सभा में पधारे थे । और समस्त हरिभक्तों और यजमान परिवार को दिव्य-आशीर्वाद प्रदान किये । प्रसाद का आयोजन प.भ. प्रकाशभाई पटेल की तरफ से किया गया था ।

- भरत के मुलाणी

गवाडा श्री स्वामिनारायण मंदिर में आयोजित सत्संग सभा

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्ण कृपा से और परम पूज्य आचार्य माराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से गवाडा श्री स्वामिनारायण मंदिर के २५ वर्ष पूर्ण होने के कारण (ता. २०-१०-०७ से २७-१०-७७ सभी हरिभक्तों को सत्संग भक्ति का विशेष बल प्राप्त हो और श्रीहरि की मूर्ति का सुख प्राप्त हो उस निमित २५ सत्संग सभा का आयोजन किया गया। जिसकी प्रथमसभा ता. २०-१०-०६ के दिन अमहदाबाद के निर्णयनगर विस्तार में श्री स्वामिनारायण स्कूल में हुई थी । जिसके यजमान प.भ. दशरथभाई कानजीभाई पटेल (गवाडा वाले) बने थे । इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने पधारकर सभा को दिव्य आशीर्वाद प्रदान करके अति प्रसन्न हुए थे । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल वाडजने अच्छा सहयोग प्रदान किया । इसी प्रकार ता. १५-१०-२००६ के रविवार की रात्रि को ८ से १२ कुबेरनगर बंगला हरिया में प.भ. कानजीभाई रेवाभाई तथा प.पू. रमेशभाई रेवाभाई (गवाडा वाले) के यजमान पद पर सुंदर सभा आयोजित हुई । इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने पधारकर समस्त सभा को और यजमान परिवार को दिव्य आशीर्वाद प्रदान किया । पूरव पटेल ने कीर्तन भक्ति का लाभ प्रदान किया । दोनो सभा में शा. स्वामी रामकृष्णदासजीने कथा वार्ता का और छोटे पी.पी. स्वामीने सभा संचालन का लाभ दिया ।- *स्वामी जयप्रकाशदासजी*

डांगरवा (वांटा-तलपद) श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से डांगरवा के दोनो मंदिर में दिवाली को ठाकुरजी के समक्ष सुंदर भिन्न-भिन्न पकवान का भव्य अन्नकूटोत्सव किया गया । सुबह ९ से ४ बजे तक गाँव के वृद्ध, भाई-बहनोने दर्शन करके अपने जीवन को धन्य बनाया । डांगरवा गाँव के चुस्त श्री नरनारायणदेव गादी को डाभी मफाजी सरदारजीने स्वीकार्य किया है ।

घाटलोडीया नवनिर्मित मंदिर में उत्सवों की परंपरा

भरतखंड के राजाधिराज सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव की और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की अहमदाबाद शहर पर अत्यंत कृपा है । एक वर्ष एक हरि मंदिर और एक शिखरबद्ध मंदिर निर्माण की योजना पूर्ण की जाती है । घाटलोडीया विस्तार में हाल ही में जमीन संपादन करके नीव रखी गई और देखते ही देखते मंदिर भी खडा हो गया । हरिभक्तों ने भी पावरफुल मेहनत पुरुषार्थ किया है । शरद पूर्णिमा को यहाँ

हरिभक्तों ने भव्य शरदोत्सव किया और दिवाली के अन्नकूट में भी भिन्न-भिन्न पकवान बनाये गये । हरिभक्तों की संख्या अत्यंत अधिक थी । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री अत्यंत प्रसन्न होकर घाटलोडीया के भक्तों को आशीर्वाद प्रदान किये । उसका यह परिणाम है । - *प्रविणभाई टी. पटेल*

दंढाव्य प्रदेश के करजीसण मंदिर में चतुर्थ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया

दंढाव्य प्रदेश की पंचतिथि का यात्राधाम गुजरात का सबसे विशाल करजीसण हरि मंदिर का चतुर्थ पाटोत्सव प.पू.ध.धु. बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में और संतो तथा देश-विदेश के हरिभक्तों की शुभ उपस्थिति में दबदबा पूर्वक ता. १९-१०-२००६ धन तेरस के दिन पर धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग पर संतोने श्री हरिकृष्ण महाराज की आरती उतारकर दिव्य दर्शन का महालाभ दिया ।

प्रासंगिक सभामें शा. विश्वप्रकाश-दासजीने सभा संचालन किया था । बीलीया, जमीयतपुरा, नाराणघाट और सिध्धपुर मंदिर के संतोने प्रेरक प्रवचन करके गाँव की अद्‌भूत दिव्य लीला प्रसंगो को याद की थी । उस में समस्त सभा को आशीर्वाद देते हुए प.पू. बडे महाराजश्रीने कहा कि श्री नरनारायणदेव में अखंड निष्ठा रखनेवाला मोक्ष का भागी बन सकता है । बाकी दूसरे को घर पर न्योता देने पर जानेवाले का कल्याण बिगड जाता है । ऐसा कहकर सभा को दिव्य आशीर्वाद प्रदान किये । भगाभाई पटेल के सुपुत्र (यु.एस.ए.) श्री कौशिकभाई तथा श्री योगेशभाई मुख्य यजमान पद का लाभ लिया । प.पू. महाराजश्री का पूजन आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किये । यु.एस.ए. से पधारे हुए श्री प्रहलादभाई पटेल, श्री प्रफुल्लभाई पटेल, श्री भीखाभाई पटेल, श्री राजुभाई पटेल आदि हरिभक्त पूजन में जुडे थे । राजेन्द्रभाई, अरविंदभाई, नलीनभाई, हसमुखभाई, सुरेश भोगीलाल, कौशिकभाई, दशरथभाई, विष्णुभाई, लालभाई, रमेशभाई आदि हरिभक्तगण पाटोत्सव के सह यजमान बने थे । इस प्रकार यहाँ चौथा पाटोत्सव का दर्शन करके सब धन्य धन्य हो गये ।

- *प्रहलादभाई पटेल, न्युजर्सी*

श्री नरनारायणदेव धार्मिक परीक्षा के अंतर्गत

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव धार्मिक परीक्षा ता. १७-१२-०६ रविवार को निर्धारित केन्द्रो पर ली जायेगी । इसीलिए सभी केन्द्र संचालको को परिक्षार्थियों के नाम की लीस्ट शीघ्र प्रदान कर दी जाये ।और परीक्षा के पेपर, सप्लीमेन्टरी आदि स्टेशनरी सामान ले जायें । तथा केन्द्र प्रारंभ करनेवाले को परीक्षा की पुस्तक का सेट दिया जायेगा ।

श्रीनरनारायणदेव धार्मिक शीक्षण केन्द्र संचालकश्री
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबदा (सभामंडप)
प्रात: ८-०० से १०-३०

हमारी शिक्षण संस्था के समाचार

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री शिक्षण ट्रस्ट

संचालित श्री सहजानंद सेकेन्डरी हायर सेकन्डरी (इंग्लीश मीडीयम) के विद्यार्थियोंने रमतोत्सव में भाग लेकर अनोखी सिद्धि प्राप्त की है ।

पालडी-आंबावाडी बोर्ड कक्षा वोर्ड चेम्पीयनशीप १. कबडी सीनीयर भाई २. कबडी सिनीयर बहनें ३. कबडी जुनीयर भाई ४. बेस्ट एथ्लेट (भाई: सोलंकी हार्दिक कक्षा-१२

जिल्ला कक्षा पर खेलने के लिये पसंद हुए खिलाडी

(१) पटेल ध्रुवीश बी. ४०० मी. दोड (सिनीयर) (२) सोलंकी हार्दिक १०० मी. दौड (सिनीयर) (३) सोलंकी हार्दिक हाई जम्प (सिनीयर) (४) नागोरी देवांश १०० मी. दौड (और ४०० मी. दौड (५) पंचाल विवेक गोला फैंक (६) शाह शिवम हाई जम्प (७) वोरा खुशाली गोला फैंक

राज्य कक्षा पर

(१) नागोरी देवांशी बी ४०० मी. दौड (३) सोलंकी हार्दिक १०० मी. दौड

उपरोक्त विद्यार्थीओं की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आशीर्वाद प्रदान करते हैं । - *प्रिन्सीपाल*

विदेश सत्संग वृत्तान्त

शिकागो श्री स्वमिनारायण मंदिर में पूज्य महाराजश्री का प्राकट्योत्सव मनाया गया

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्ण कृपा से महंत स्वामी धर्मवल्लभदासजी की प्रेरणा से शिकागो के समस्त हरिभक्तों के साथ सहकार से विजया दशमी के पवित्र दिन पर हमारे प्राण प्यारे श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के ३५ वें प्राकट्योत्सव को धूमधाम से मनाया गया । मंदिर में विराजमान श्रीहरिकृष्ण महाराज को आज आचार्य महाराजश्री का वेश धारण करवाया गया । जिसके अद्‌भुत दर्शन करके हरिभक्त गण आनंद मग्न हो गये थे । संतो ने नंदसंतो द्वारा रचित धर्मवंशी आचार्यश्री का सुंदर माहात्म्य विस्तारपूर्वक कहा था । उत्सव-मंडल के सभ्य राजुभाई, प्रविणभाई, नरेशभाई, ठाकोरभाई, विष्णुभाई, रमेश ब्रह्मभट्ट और जगदीशभाई (प्रमुख) आधि हरिभक्तों ने भी समूह में उत्सव किया । सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की तसवीर का सभी संत-हरिभक्तों ने पूजन अर्चन करके दर्शन का दिव्य लाभ लेकर कृतार्थ हो गये । संतो के साथ युवा हरिभक्तों और बच्चों को केक काटकर पू. आचार्य महाराजश्री की जय बुलवाकर आनदं व्यक्त किया था । श्री विष्णुभाई, धनश्याम भगत, कमलेशभाई, धनश्याम कविऔर सत्संग महिला मंडल की सेवा मुख्य थी । हजारो हरिभक्तों ने इस प्रसंग पर दर्शन करके दिव्य अनुभूति की प्राप्ति की थी । प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है ।

मंदिर में जलझीरणी का उत्सव शरदोत्सव आदि संत-हरिभक्तोंने बहुत धूमधाम से मनाया ।

- *इशान त्रिवेदी-विष्णुभाई*

कोलोनीया श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रथम पाटोत्सव मनाया गया

अमेरिका के कोलोनीया न्युजर्सी श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से और मंहत स्वामी

देवप्रसाददासजी की प्रेरणा से प्रथम पाटोत्सव का सुंदर आयोजन किया गया था । इस प्रसंग पर सत्संगी जीवन कथा पारायण का आयोजन किया गया । पोथी यात्रा में अनेक हरिभक्त जुडे थे । उसी प्रकार कथा-वार्ता का लाभ लेने बडी संख्या में हरिभक्त अधिक संख्या में पधारे थे । पाटोत्सव अभिषेक में प.भ. निमेषभाई पटेल परिवार ने लाभ लिया था महापूजा का आयोजन कौशिकभाई भावसार परिवार तरफ से हुआ था । महापूजा में १३० जितने हरिभक्तोने लाभ लिया था । महापूजा की विधि श्री जगदीशभाई शुक्लने करवाई थी । श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री संत मंडल के साथ कोलोनीया मंदिर में पधारे थे । तब स.गु. महंत स्वामी देवप्रसाददासजी और संत हरिभक्तों ने उत्सव का उत्साह पूर्वक भव्य स्वागत किया ।

उसके बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से धूमधाम से वेदविधिपूर्वक पाटोत्सव-अभिषेक संपन्न हुआ । इस प्रसंग पर अपने आई.एस.एस.ओ. के न्युजर्सी, शिगाको, बोस्टन, ह्युस्टन, एल.ए. और अहमदाबाद से पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) आदि संत पधारे थे ।

बहनोको दर्शन-आशीर्वाद देने हेतु प.पू.अ.सौ. बडे गादीवालाश्री और पू. बिन्दुराजाने पधारकर बहनो को अलौकिक सुख दिया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ भाइयोंने और प.पू. गादीवालाश्री और पूज्य बिन्दुराजा के साथ बहनोने समूह आरती का दिव्य लाभ लिया था ।

प्रासंगिक सभा में संतो को प्रेरणा प्रवचन देकर बाद में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि "भगवान बिना कुछ शक्य नहीं है । भगवान की इच्छा के अनुसार जगत चलता है । और भविष्य में भी चलेगा उस विषय पर अलग-अलग दृष्टांत देकर दिव्य आशीर्वाद प्रदान किये । सेवा संस्था द्वारा फ्री मेडीकल केम्प में अनेक भक्तोंने लाभ लेकर दवा ली थी । जहाँ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने पधारकर सेवा के लिये मेडिकल प्रवृत्ति को देखकर सेवा भावि डोक्टरो की टीम को धन्यवाद के साथ आशीर्वाद दिये थे । डॉ. जिग्नेश शाह और उनकी टीमने सुंदर व्यवस्था की थी ।

आचार्य महाराजश्री का प्राकट्योत्सव

अपने कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ३५ वाँ प्राकटोत्सव विजया दशणी के दिन-संतो हिरभक्तों ने धूमधाम से मनाया । इस प्रसंग पर गुजरात के लोक कलाकार श्री भीखुदान गढवी और उनके सहकलाकारो का कार्यक्रम किया गया । सभा में स.गु. महंत स्वामी देवप्रसाददासजी ने और संतो-हरिभक्तों ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की तसवीर का पूजन-आरती करके सभा में पू. आचार्य महाराजश्री के माहात्म्य का वर्णन किया । महंत स्वामीने और कमेटीके सभ्यों ने सभा के यजमानो का फूलहार पहनाकर सन्मान किया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से सत्संग प्रवृत्ति चलती है ।

- प्रविणभाई शाह

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

अहमदाबाद : कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के वयोवृद्ध तपस्वी संत स.गु. स्वामी श्री कृष्णजीवनदासजी गुरुस.गु. शास्त्री स्वामी हरिस्वरूपदासजी (अहमबादा, जेतलपुर, छपीया, माणसा और धोलका केमाजी महंतश्री) ता. १९-१०-२००६ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं । जिनके अक्षरवासी होने पर संप्रदाय में एक संत की कमी हो गई है ।

सिध्धपुर : श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत स.गु. स्वामी भक्तिवल्लभदासजी गुरुस.गु. शास्त्री स्वामी हरिनारायणदासजी कुछ समय पहले ही श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हो गये । जिनके अक्षरनिवासी होने पर सत्संग में बडी कमी उत्पन्न हो गयी है ।

भुज (कच्छ) : श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत स.गु. स्वामी श्रीहरिस्वरूपदासजी ता. ३०-१०-२००६ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हो गये । जिनके अक्षरनिवास से कच्छ और समग्र संप्रदाय में एक महान संत की कमी उत्पन्न हुई है । कुछ समय पहले स्वामीश्री की खराब तबियति के समाचार अपने प.पू. बडेमहाराजश्री और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को प्राप्त होते ही वे संत-मंडल के साथ स्वामी के हाल-चाल के समाचार लिये और दर्शन देने हेतु मंदिर भी पधारे थे ।

खरवा (मुलीदेश) : प.भ. मरधाबहन भीमाभाई पटेल ता. १७-१०-२००६

बकोल (मुलीदेश) : रैया खटाणा परिवार के प.भ. खटाणा डाह्याभाई अरजणभाई ता. १७-९-२००६

नया वाडज : प.भ. रमाबहन बाबुभाई पटेल (बान्टार्ड) ता. १०-९-२००६

नया वाडज : प.भ. भीखाभाई बलदेवभाई गज्जर ता. १५-९-२००६

बालवा : प.भ. प्रेमचंदभाई जीवणलाल ता. १९-९-२००६

कमलापुरा (खाखरीया) : प.भ. मगनभाई पटेल ता. २०-९-२००६

जीवराजपार्क-अहमदाबाद : प.भ. जयंतीलाल चुनीलाल ठक्कर ता. ६-१०-२००६

खंडेरावपुरा (कडी) : प.भ. प्राणशंकर आत्माराम पाठक ता. १२-१०-२००६.

सर्वावतारी श्रीजी महाराज अक्षरनिवासी हरिभक्तों को अपनी सेवामें रखें और उनेक परिवार को दुःख सहन करने का बल प्रदान करे ऐसी सर्वोपरिश्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना है ।



प.पू. माताजी के अक्षरनिवास का समाचार मिलते ही गुजरात के मुख्यमंत्रीश्री नरेन्द्र मोदी, गुजरात भाजपा के नये प्रमुखश्री पुस्योत्तम स्याला और मंत्रीश्री भूपेन्द्रभाई चूडासमा प.पू. बडे महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री का दर्शन करके हाल समाचार पूछे छे।



श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में ता. १-११-२००६ को प.पू. माताश्री की स्मरणांजलि सभा प.पू. बडे महाराजश्री प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में संपन्न हुई थी। जिसमें दोनो देश के संत-हरिभक्त बडी संख्या में स्मरणांजलि सभा में उपस्थित रहे।

Registered under RNI No. applied Followed by words "Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month
under postal Regd. No. GUJ. 581 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-08





Praful Kotarsani

पवित्र कैलास मानसरोवर के कुदरती नयनरम्य मनमोहक सौंदर्य की तसवीर, पवित्रकैलास मानसरोवर में स्नान विधि के बाद संत-हरिभक्तो के साथ दर्शन देते हुए प.प. बड़े महाराजश्री ।